

ज्वाला एक्सप्रेस न्यूज



आर.एन.आई. नं. :- CHHHIN/2021/82386

सत्वी खबर सबसे पहले

online- jwalaexpress.com

वर्ष - 05, अंक - 31

दुर्ग (छ.ग.), दिनांक 02 अप्रैल से 08 अप्रैल 2026 (प्रत्येक गुरुवार)

पृष्ठ - 8, मूल्य - 05 रुपए

लोक-आस्था, परंपरा और विकास का संगम बना कुँवरगढ़ महोत्सव

जहां संस्कृति का सम्मान होता है, वहीं से विकास की नई शुरुआत होती है – मुख्यमंत्री साय

रायपुर (ज्वाला एक्सप्रेस)। छत्तीसगढ़ की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत और विकास के संगम का सशक्त प्रतीक ‘कुँवरगढ़ महोत्सव’ का आज धरसीवा में मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय द्वारा भव्य शुभारंभ किया गया। इस अवसर पर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने 136 करोड़ रुपये से अधिक लागत के विभिन्न विकास कार्यों का लोकार्पण एवं भूमिपूजन करते हुए क्षेत्र को बड़ी सौगात दी। उन्होंने ग्राम कूरा का नाम उसके ऐतिहासिक गौरव के अनुरूप ‘कुँवरगढ़’ करने की महत्वपूर्ण घोषणा की, जिससे क्षेत्रवासियों में उत्साह का वातावरण देखने को मिला।

मुख्यमंत्री श्री साय ने अपने संबोधन में कहा कि कुँवरगढ़ महोत्सव केवल एक सांस्कृतिक आयोजन नहीं, बल्कि छत्तीसगढ़ की लोक-आस्था, परंपरा और गौरवशाली इतिहास को जन-जन तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश की सांस्कृतिक धरोहर को सहेजने और उसे नई पहचान देने के लिए निरंतर कार्य कर रही है और बस्तर, सरगुजा, कोरिया तथा सिरपुर महोत्सव की शृंखला में अब कुँवरगढ़ महोत्सव भी एक विशिष्ट पहचान बनाएगा। इस दौरान



उन्होंने नवनिर्मित तहसील कार्यालय का लोकार्पण करते हुए कहा कि इससे क्षेत्र के नागरिकों को राजस्व संबंधी कार्यों में त्वरित और बेहतर सुविधा उपलब्ध होगी।

मुख्यमंत्री श्री साय ने क्षेत्र के विकास को नई गति देने के उद्देश्य से गौरवपथ निर्माण, रानीसागर तालाब के सौंदर्यीकरण, पुलिस चौकी की स्थापना, खारून नदी में एनीकट

निर्माण, खेल मैदान के उन्नयन तथा रायपुर के टेकारी-नयापारा से बड़े नाला मार्ग के चौड़ीकरण एवं मजबूतीकरण जैसे महत्वपूर्ण कार्यों की घोषणा की। उन्होंने कहा कि इन परियोजनाओं से आधारभूत सुविधाओं का विस्तार होगा, आर्थिक गतिविधियों को प्रोत्साहन मिलेगा और आमजन के जीवन स्तर में उल्लेखनीय सुधार आएगा।

उल्लेखनीय है कि धरसीवा क्षेत्र का प्राचीन ग्राम कूरा, जिसे अब ‘कुँवरगढ़’ के रूप में पुनर्स्थापित किया जा रहा है, अपने भीतर गौरवशाली इतिहास समेटे हुए है। यह क्षेत्र आदिवासी शासक राजा कुँवर सिंह गोंड के साम्राज्य का महत्वपूर्ण केंद्र रहा है, जिनकी वीरता और विरासत आज भी यहां के जनजीवन में जीवंत है। उत्तर में माता कंकालिन, दक्षिण में माता चंडी, पश्चिम में माता महामाया और पूर्व में भगवान चतुर्भुजी की उपस्थिति इस क्षेत्र को धार्मिक और आध्यात्मिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण बनाती है। लगभग 12 हजार की आबादी वाला यह क्षेत्र अपनी परंपरा और विकास के संतुलन के साथ आगे बढ़ रहा है।

महोत्सव में राज्य शासन के विभिन्न विभागों के स्टॉल लगाए गए हैं तथा स्थानीय लोक कलाकारों की प्रस्तुतियां कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण बनी हुई हैं। मुख्यमंत्री ने कहा कि ऐसे आयोजन नई पीढ़ी को अपनी जड़ों से जोड़ने का सशक्त माध्यम बनते हैं और प्रदेश की सांस्कृतिक पहचान को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाते हैं। उन्होंने जनजातीय समाज के गौरवशाली इतिहास का उल्लेख करते हुए कहा कि यह भूमि

नक्सलमुक्त छत्तीसगढ़ गढ़ेगा विकास का स्वर्णिम भविष्य : मुख्यमंत्री साय



छत्तीसगढ़ में नक्सलवाद की समाप्ति की दिशा में मिली ऐतिहासिक सफलता के बीच आज मुख्यमंत्री श्री विष्णुदेव साय से उनके नवा रायपुर स्थित निवास कार्यालय में उपमुख्यमंत्री श्री विजय शर्मा ने सौजन्य मुलाकात की। इस अवसर पर श्री शर्मा ने मुख्यमंत्री को नक्सलवाद के खاتم की दिशा में मिली इस बड़ी उपलब्धि पर बधाई देते हुए पुष्पगुच्छ भेंट कर उनका अभिनंदन किया। इस अवसर पर मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि नक्सलमुक्त छत्तीसगढ़ अब विकास, विश्वास और समृद्धि के नए युग की ओर अग्रसर होगा। उन्होंने कहा कि नक्सलवाद वर्षों तक प्रदेश की प्रगति में सबसे बड़ी बाधा बना रहा और विशेष रूप से बस्तर अंचल लंबे समय तक लाल आतंक के साये में रहा मुख्यमंत्री ने कहा कि अब परिस्थितियां तेजी से बदल रही हैं और नक्सल प्रभावित सभी क्षेत्रों में विकास की मुख्यधारा मजबूत हो रही है। बस्तर सहित पूरे प्रदेश में शांति, सुरक्षा और विकास का नया वातावरण तैयार हो रहा है, जिससे आमजन के जीवन में सकारात्मक परिवर्तन स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा है मुख्यमंत्री श्री साय ने इस ऐतिहासिक उपलब्धि का श्रेय देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी और केंद्रीय गृहमंत्री श्री अमित शाह के दृढ़ संकल्प, स्पष्ट नीति और प्रभावी रणनीति को दिया। उन्होंने कहा कि उनके नेतृत्व में भयमुक्त और सुरक्षित छत्तीसगढ़ का सपना आज साकार हो रहा है मुख्यमंत्री ने नक्सलवाद के विरुद्ध अभियान में अग्रणी प्राणों की आहुति देने वाले वीर जवानों को भावपूर्ण श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उनकी शहादत ने इस सफलता की नींव रखी है।

लोकतंत्र के चौथे स्तम्भ को और अधिक सुदृढ़, विश्वसनीय और जनोन्मुखी बनाएं- राज्यपाल डेका

■ छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट यूनियन प्रादेशिक पत्रकार सम्मेलन और सम्मान समारोह में शामिल हुए

रायपुर (ज्वाला एक्सप्रेस)। राज्यपाल श्री रमेन डेका ने कहा कि लोकतंत्र में व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के बाद पत्रकारिता को चतुर्थ स्तंभ माना गया है। उन्होंने कहा कि पत्रकारिता केवल एक व्यवसाय नहीं, बल्कि एक मिशन और साधना है। समाज का दर्पण कहलाने वाली पत्रकारिता ने सदैव जनता और सत्ता के बीच संपर्क-सेतु की भूमिका निभाई है और लोगों को जागरूक किया है। इसलिए इसे लोकतंत्र का चौथा स्तंभ कहा जाता है।

राज्यपाल श्री डेका आज भिलाई सेक्टर 4 स्थित एस.एन.जी. ऑडिटोरियम में आयोजित छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट यूनियन के प्रादेशिक पत्रकार सम्मेलन और सम्मान समारोह को मुख्य अतिथि की आंसीदी से सम्बोधित कर रहे



थे। इससे पूर्व उन्होंने उत्कृष्ट कार्य करने वाले पत्रकारों को सम्मानित किया। राज्यपाल श्री डेका ने इस अवसर पर महिला पत्रकारों को उनकी उत्कृष्ट लेखनी के लिए सम्मानित किया, जिसमें शगुफा शीरीन, अनुभूति भाखरे, कोमल धनेसर,

साक्षी सोनी शामिल हैं। इसी प्रकार समाज सेवी महिलाओं साधना चतुर्वेदी, अंजना श्रीवास्तव, लता बौद्ध, दीप्ति सिंग, सुनीता जैन को प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया।

राज्यपाल श्री डेका ने वर्तमान

चुनौतियों का जिक्र करते हुए अवगत कराया कि आज पत्रकारिता एक कठिन दौर से गुजर रही है। सोशल मीडिया के विस्फोट ने सूचना के प्रवाह को लोकांत्रिक तो बनाया है, लेकिन साथ ही विश्वास का गंभीर संकट भी खड़ा किया

है। फेसबुक, व्हाट्सएप और यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्म पर हर व्यक्ति ‘पत्रकार’ बन चुका है और सत्यापन से पहले ही समाचार वायरल हो जाते हैं। उन्होंने चिंता जताते हुए कहा कि ‘फेक न्यूज’ और ‘डीपफेक’ ने सच और झूठ के बीच की रेखा धुंधली कर दी है। इन सबके बीच आज भी प्रिंट मीडिया ने अपनी विश्वसनीयता को कायम रखा है। राज्यपाल श्री डेका ने कहा कि इन चुनौतियों का सामना करने के लिए पत्रकारिता को अपने मूल आदर्शों की ओर लौटना होगा। एक स्वस्थ पत्रकारिता ही एक स्वस्थ लोकतंत्र की नींव है। उन्होंने इस चौथे स्तंभ को और अधिक सुदृढ़, विश्वसनीय और जनोन्मुखी बनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट यूनियन के प्रदेशाध्यक्ष श्री ईश्वर दुबे, सचिव श्री सतीश बौद्ध एवं अन्य पदाधिकारी और श्री राजाराम त्रिपाठी, प्रो. संजय त्रिवेदी, वरिष्ठ पत्रकार श्री गिरिश पंकज सहित बड़ी संख्या में छत्तीसगढ़ जर्नलिस्ट यूनियन के पत्रकार उपस्थित थे।

हर नागरिक तक त्वरित स्वास्थ्य सेवा पहुंचाना हमारी प्राथमिकता : मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े



रायपुर (ज्वाला एक्सप्रेस)। छत्तीसगढ़ सरकार की महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री लक्ष्मी राजवाड़े ने आज सूरजपुर ज़िले में स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल करते हुए 9 अत्याधुनिक ‘108 संजीवनी एक्सप्रेस’ एम्बुलेंस को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।

जिला चिकित्सालय सूरजपुर से शुरू की गई यह सेवा अब दूरस्थ ग्रामीण क्षेत्रों तक त्वरित आपातकालीन चिकित्सा सुविधा उपलब्ध कराएगी इस अवसर पर मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने कहा कि मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व में राज्य सरकार प्रत्येक नागरिक को गुणवत्तापूर्ण एवं शीघ्र स्वास्थ्य सेवाएँ उपलब्ध कराने के लिए प्रतिबद्ध है। उन्होंने

कहा कि सूरजपुर की बेटी होने के नाते यह मेरे लिए गौरव का क्षण है कि मैं अपने जिलेवासियों को यह जीवनरक्षक सुविधा समर्पित कर रही हूँ।

उन्होंने कहा कि ये एम्बुलेंस केवल वाहन नहीं, बल्कि जीवन बचाने वाली महत्वपूर्ण कड़ी हैं। सरकार का उद्देश्य है कि दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाली माताएँ, बहनें और बच्चों को आपातकालीन स्थिति में समय पर उपचार मिल सके और ‘गोल्डन ऑवर’ में चिकित्सा सहायता सुनिश्चित हो।मंत्री श्रीमती राजवाड़े ने यह भी कहा कि एम्बुलेंस संचालन एजेंसी के साथ बेहतर समन्वय स्थापित कर सेवाओं की गुणवत्ता एवं प्रतिक्रिया समय में निरंतर सुधार किया जाएगा।

संघर्षों की भट्टी में तपकर सोना बने झारखंड के अंजित मुंडा, कुश्ती में जीता गोल्ड मेडल खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स

भारतीय सेना में ‘अग्निवीर’ के रूप में दे रहे हैं सेवाएं

रायपुर (ज्वाला एक्सप्रेस)। कहते हैं कि यदि इरादे फ़ैलादी हों और लक्ष्य के प्रति समर्पण हो, तो अभाव भी सफलता की राह नहीं रोक सकते। झारखंड के रामगढ़ जिले के एक छोटे से गाँव सुगिया के रहने वाले युवा पहलवान अंजित कुमार मुंडा ने इस बात को सच कर दिखाया है। अम्बिकापुर के गांधी स्टेडियम में आयोजित ‘खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स’ के दौरान अंजित ने 67 किलोग्राम भार वर्ग की कुश्ती स्पर्धा में शानदार प्रदर्शन करते हुए स्वर्ण पदक अपने नाम किया है। मात्र 20 वर्ष की आयु में सफलता के शिखर को छूने वाले अंजित का जीवन चुनौतियों से भरा रहा है। वर्ष 2009 में पिता के साये के उठ जाने के बाद, उनकी माता ने खेती-बारी और कठिन परिश्रम के बल पर परिवार को संभाला। अंजित ने वर्ष 2017-18 में कुश्ती की शुरुआत की और जेएसएसपीएस स्पोर्ट्स अकादमी में लगभग 6 वर्षों तक कड़ा अभ्यास किया। उनकी शारीरिक क्षमता और तकनीक को देखते हुए प्रशिक्षकों ने उन्हें कुश्ती के लिए तराशा।

भारतीय सेना में ‘अग्निवीर’ के रूप में दे रहे हैं सेवाएं

अंजित की खेल प्रतिभा और देश सेवा के जज्बे ने उन्हें भारतीय सेना तक पहुँचाया। पिछले वर्ष ही उनका चयन ‘अग्निवीर जीडी’ के पद पर हुआ है। अपनी इस सफलता का श्रेय वे अपने कोच को देते हैं।



अपनी जीत पर खुशी जाहिर करते हुए अंजित मुंडा ने कहा, ‘खेलो इंडिया ट्राइबल गेम्स हम जैसे जनजातीय बच्चों के लिए एक उत्कृष्ट मंच है, जो अवसर मुख्यधारा से पीछे छूट जाते हैं। पहली बार आयोजित इस प्रतियोगिता में गोल्ड जीतना मेरे लिए गर्व की बात है। अब मेरा अगला लक्ष्य छत्तीसगढ़ में आयोजित होने वाली आगामी प्रतियोगिताओं में अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करना है। पूर्व में कांस्य पदक जीतने के कारण छात्रवृत्ति से वंचित रहे अंजित को अब स्वर्ण पदक जीतने के बाद केंद्र सरकार से सहयोग और स्कॉलरशिप मिलने की पूरी उम्मीद है, ताकि वे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर देश का नाम रोशन कर सकें। अम्बिकापुर में चल रहे खेलों इंडिया ट्राइबल गेम्स में अंजित की यह उपलब्धि न केवल झारखंड बल्कि पूरे देश के जनजातीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्रोत बनी है।

मनरेगा के तहत श्रीमती अनारकली को मिला पक्का पशु शोड

दूध व्यवसाय से हो रही अच्छी आमदनी

दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)।

ग्राम पंचायत महमरा की रहने वाली श्रीमती अनारकली यादव एक साधारण ग्रामीण महिला हैं, पति श्री रामेश्वर यादव के साथ वे वर्षों से पशुपालन और कृषि कार्य के जरिए अपने परिवार का भरण-पोषण कर रही थीं। श्रीमती अनारकली के पास पहले से कुछ गौधन था, जो उनके जीवनयापन का मुख्य आधार था। लेकिन पशुओं के लिए उचित व्यवस्था न होने के कारण उन्हें कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता था। पशुओं को कच्चे शोड में रखना पड़ता, तो कभी कीचड़ और गंदगी में। इससे पशुओं का स्वास्थ्य बिगड़ता और दूध उत्पादन भी प्रभावित होता था। आखिरकार उन्होंने हिम्मत पकड़े पशु शोड का सपना देख रही थीं, लेकिन आर्थिक तंगी के कारण यह संभव नहीं हो पा रहा था। आखिरकार उन्होंने हिम्मत जुटाई और अपनी समस्या ग्राम



सभा में रखी।

उनकी बात को गंभीरता से लेते हुए ग्राम पंचायत ने महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोजगार गारंटी योजना (मनरेगा) के अंतर्गत उनके लिए पशु शोड निर्माण को स्वीकृति दी। करीब 0.95 लाख रुपये की लागत से पक्का पशु शोड बनाया गया। निर्माण के दौरान ग्राम पंचायत का पूरा सहयोग मिला और इस प्रक्रिया में अनारकली को मजदूरी भी प्राप्त हुई, जिससे उनकी आय में तुरंत सहारा मिला। शोड बनने के बाद जैसे उनकी जिंदगी बदल गई। अब उनके पशुओं को सुरक्षित, साफ और व्यवस्थित आश्रय मिलने लगा। इसका सीधा असर पशुओं के स्वास्थ्य और दूध उत्पादन पर पड़ा। पहले जहां

उनके पास लगभग 11 पशु थे, वहीं अब उनकी संख्या बढ़कर 35 के करीब पहुंच गई है। आज अनारकली केवल खेती तक सीमित नहीं हैं, बल्कि दूध व्यवसाय से भी अच्छी आमदनी कमा रही हैं। उनकी वार्षिक आय अब 2 लाख रुपये से अधिक हो गई है। श्रीमती अनारकली बताती हैं कि पहले हर समय पशुओं की चिंता बनी रहती थी। बारिश, ठंड, हर मौसम में परेशानी होती थी। पक्का शोड बनवाने का सपना था, लेकिन पैसों की कमी आड़े आती थी। मनरेगा योजना से यह संभव हुआ। शोड का निर्माण होने से पशु सुरक्षित हैं, उनकी संख्या भी बढ़ रही है और आमदनी भी। इसके लिए उन्होंने राज्य सरकार का आभार व्यक्त किया।

संभाग स्तरीय युवा संसद प्रतियोगिता में कोरिया जिला प्रथम, लगातार तीसरी बार बना विजेता

विद्यार्थियों का उत्कृष्ट प्रदर्शन, विभिन्न श्रेणियों में प्राप्त किए पुरस्कार

कोरिया

संभाग स्तरीय युवा संसद प्रतियोगिता 2025-26 में कोरिया जिले की टीम ने शानदार प्रदर्शन करते हुए लगातार तीसरी बार विजेता बनकर हैट्रिक पूरी की है। यह प्रतियोगिता 29 मार्च 2026 को अंबिकापुर में आयोजित हुई, जिसमें कोरिया जिले के शासकीय आदर्श कन्या विद्यालय बैकुंठपुर एवं सेजस बैकुंठपुर के 50 विद्यार्थियों ने भाग लिया। कलेक्टर श्रीमती चंदन त्रिपाठी एवं जिला पंचायत सीईओ डॉ. आशुतोष चतुर्वेदी के मार्गदर्शन तथा जिला शिक्षा अधिकारी श्री विनोद राय व स्कूल शिक्षा विभाग के सहायक संचालक श्री जितेंद्र गुप्ता एवं युवा संसद के नोडल अधिकारी के सहयोग से टीम ने यह उल्लेखनीय उपलब्धि हासिल की। प्रतियोगिता में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए आरजू अंसारी को सर्वश्रेष्ठ प्रधानमंत्री, रोहित तिवारी को



सर्वश्रेष्ठ सांसद तथा लक्ष्मी सिंह को सर्वश्रेष्ठ प्रश्नकर्ता के पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसी अवसर पर शासकीय आदर्श कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय की

व्याख्याता श्रीमती जे. दुबे को शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान के लिए 'शिक्षा श्री' सम्मान प्रदान किया गया। कलेक्टर श्रीमती चन्दन त्रिपाठी ने इस उपलब्धि पर

विद्यार्थियों को शुभकामनाएं देते हुए कहा कि इस सफलता से न केवल जिले का मान बढ़ा है, बल्कि विद्यार्थियों में नेतृत्व और संसदीय समझ भी बढ़ेगी।

ग्राम चिल्हाटी में धड़ल्ले से बिक रही अवैध शराब, स्थानीय विधायक भी मौन

अंबागढ़ चौक

(मोहला-मानपुर-अंबागढ़ चौकी) लोक अंबागढ़ चौकी के अंतर्गत ग्राम चिल्हाटी में अवैध शराब बिक्री का मामला लगातार गंभीर होता जा रहा है। ग्रामीणों का आरोप है कि गांव में खुलेआम काउंटर लगाकर शराब बेची जा रही है, जिससे सामाजिक वातावरण पर नकारात्मक असर पड़ रहा है। सूत्रों के मुताबिक इस अवैध कारोबार के कारण युवाओं में नशी की प्रवृत्ति बढ़ रही है और गांव में असामाजिक गतिविधियां भी तेज हो गई हैं। स्थिति यह है कि लोग असुरक्षा और असहजता महसूस कर रहे हैं। स्थानीय की बात यह है कि इस गंभीर मुद्दे पर अब तक न तो प्रशासन ने कोई ठोस



कदम उठाया है और न ही क्षेत्र के स्थानीय विधायक ने कोई प्रतिक्रिया दी है।

ग्रामीणों का कहना है कि कई बार शिकायत किए जाने के बावजूद जिम्मेदार जनप्रतिनिधि और अधिकारी मौन बने हुए हैं। गांववासियों ने प्रशासन और

आबकारी विभाग से तत्काल कार्रवाई की मांग करते हुए कहा है कि यदि जल्द कदम नहीं उठाए गए तो वे आंदोलन करने को मजबूर होंगे। अब सवाल यह उठता है कि आखिर कब तक इस तरह अवैध शराब का कारोबार चलता रहेगा और जिम्मेदार लोग कब जागेंगे।

जांजगीर-चांपा

गुरु शिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति का एक अभिन्न अंग है। एक गुरु ही शिष्य के जीवन में ज्ञान रूपी अमृत का सिंचन कर उसे ज्ञानवान, चरित्रवान व समर्थवान बनाता है। राष्ट्र निर्माण में योगदान अतुलनीय है। यह उक्ति डॉ. रामरतन श्रीवास 'राधे राधे' (राष्ट्रीय उपाध्यक्ष जीवनधारा नमामि गंगे जल संसाधन नदी विकास गंगा संरक्षण मंत्रालय भारत सरकार एवं राष्ट्रीय महामंत्री काव्य रसिक संस्थान) ने कहा कि गुरुशिष्य परंपरा भारतीय संस्कृति की एक प्राचीन और पवित्र धारा है, जो ज्ञान को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक अखंड रूप से पहुंचाती है। यह केवल किताबी शिक्षा नहीं, बल्कि गुरु द्वारा शिष्य के मानसिक, नैतिक और आध्यात्मिक



विकास का मार्गदर्शक है, जो समर्पण, श्रद्धा और विश्वास पर आधारित होकर चरित्र निर्माण और सांस्कृतिक विरासत को जीवित रखता है। यह उपरोक्त उद्धार इंजीनियर विनय सिंह शत्रिघ्न ने कहा। गुरु वह व्यक्ति होता है जो ज्ञान और अनुभव की ज्योति को शिष्य के जीवन में प्रकाशित करता है, जबकि शिष्य वह व्यक्ति होता है जो गुरु के उपदेशों और मार्गदर्शन में ज्ञान और श्रद्धा के साथ सीखने का प्रयास करता है। यह उक्ति इंजीनियर रमेश साव ने कहा। कृष्ण कुमार साहू ने कहा कि शिष्य का कार्य गुरु के उपदेशों को अपनाना और उन्हें अपने जीवन में अमल में लाना होता है। कवयित्री लतेलिन 'लता'

ईमानदारी की मिसाल : कर्मचारी ने खदान में मिला पर्स चालक को सुरक्षित लौटाया

दीपका/गेवरा

औद्योगिक क्षेत्र दीपका/गेवरा में ईमानदारी और मानवता का एक सराहनीय उदाहरण सामने आया है। गेवरा खदान में कार्यरत एसटीएलएल कंपनी के कर्मचारी विकास नन्द ने कर्तव्यनिष्ठ और ईमानदारी का परिचय देते हुए एक वाहन चालक का खोया हुआ पर्स सम्मान वापस लौटा दिया है।

घटना का विवरण

दिनांक 26 मार्च 2026 को गेवरा खदान क्षेत्र में वाहन क्रमांक छत्त12 डब 3299 के चालक कंचन कुमार निवासी ज्योति नगर, दीपका का पर्स कहीं गिर गया था। पर्स में महत्वपूर्ण दस्तावेज और नकदी मौजूद थे। यह पर्स ड्यूटी के दौरान एसटीएलएल वर्कर विकास नन्द को मिला।

ईमानदारी पूर्वक वापसी

विकास ने तुरंत इसकी सूचना



एसटीएलएल के एरिया फ़ैल्टड मैनेजर प्रभाकर शर्मा को दी। श्री शर्मा के मार्गदर्शन में विकास नन्द ने वास्तविक स्वामी को तलाश शुरू की। पूर्ण ईमानदारी बरतते हुए, उन्होंने चालक कंचन कुमार से संपर्क किया और उनका पर्स सुरक्षित रूप से उन्हें सौंप दिया। अपना खोया हुआ पर्स और जरूरी कागजात वापस पाकर चालक कंचन कुमार ने विकास नन्द और

एसटीएलएल प्रबंधन का आभार व्यक्त किया।

सराहना

विकास नन्द के इस कार्य की एसटीएलएल डायरेक्टर विपिन मलिक द्वारा काफ़ी प्रशंसा की जा रही है। विपिन मलिक का कहना है कि आज के समय में इस तरह की ईमानदारी दूसरों के लिए प्रेरणा का स्रोत है।

कुंवरगढ़ महोत्सव में मुख्यमंत्री को आमंत्रण, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने सौंपा न्योता



रायपुर

जिला जनसंपर्क कार्यालय रायपुर से प्राप्त जानकारी के अनुसार, कलेक्टर डॉ. गौरव सिंह ने मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय को आगामी कुंवरगढ़ महोत्सव में शामिल होने के लिए औपचारिक आमंत्रण दिया। इस दौरान कलेक्टर डॉ. सिंह ने मुख्यमंत्री को महोत्सव के महत्व, इसकी ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक विशेषताओं तथा आयोजन की विस्तृत रूपरेखा की जानकारी दी।

उन्होंने मुख्यमंत्री से कार्यक्रम में उपस्थित होकर महोत्सव की गरिमा बढ़ाने का आग्रह किया। बताया गया कि कुंवरगढ़ महोत्सव क्षेत्र की सांस्कृतिक विरासत, लोककला और इतिहास को नई पहचान देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है। महोत्सव के माध्यम से क्षेत्र के गौरवशाली इतिहास को जनप्रजन तक पहुंचाने का प्रयास किया जाएगा। इस अवसर पर जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी कुमार विश्वरंजन एवं एसडीएम नंदकुमार चौबे भी उपस्थित रहे।

।। तोर नांव अमर मंदराजी जी ।।

।। तोर नांव अमर मंदराजी जी ।।
तैंय कचरा ला हीरा बनायेस,अनगढ़ ला तैंय गढ़ेस जी।
छोसगढ़ी नाचा ला दाऊ, जग मा जहरित करेस जी।।
कोरिया-पंडरा छुही-कोइला,अउ सहरे गाड़ा घीट मा।
घर-बार ला फूँकैस अपन,तोर रेगना माटी के पन्कार मन ला, मोहनी सुरतिया म्हेस जी।।
ममहावय छोसगढ़ दाई,फुलवा कस तैंय डरेस जी।
काहत लगे दाऊ मंदराजी, रवेले मा जवन धरेस जी।।
रतिहा-रतिहा लादे रहैंय, गर बाजा-रूंजी खोथ गर।
खड़े साज बैठकी बइठरे, गियास अंजोर करेस जी।।
रवेले नाचा सजे राह्य, कलाकार आला-आला ले।
मदन,लालू,ठाकुर,शुलवा,अउ फिका,जयदी, माला ले।
सुकालू फगू नोहर नारद, साहित राह्य दाई शारद।
हौंस-हौंस पेट पिरावय,गोविंद गमतिहा मत्वाला ले।।
लोककरा के साज-राजई ले,नइ बाँधेस जमीनरी जी।
परी भर नइ खैत बाँधेस,सबो बैचागे बखरी-बारी जी।।



घर-बार ला फूँकैस अपन,तोर रेगना माटी के पन्कार कसा।
तोर अईसन गवाई-बजई, का नइ जाने दुनियादारी जी।।
नाचा-गमत के बिमत हा, भाग ला घलो सोचा जाये।
संग रह्य ना शारद लक्ष्मी, का बांवे-खुंघे घोवा जाये।।
जिनगी नोहे नाचा-गमत,का भेद यहू तैंय नइ जानेस।
अंतकाल हा तोर मंदराजी, पखरा ला घलो रोवा जाये।।
अपन-अपन सब ला परे हे, दांव चलन ईँला बाजी जी।।
कोस-कुटुका ले होवय गुजारा,फेर कोन ईँला राजी जी।।
स्वार्थ के जोगली बुताये,परमरथ के सुरुज जगमगाये।
तोर असन होइस ना होवय,हे नांव अमर मंदराजी जी।।

रोहन साहू
'मोखला' (राजबंदगी)
799840942

राष्ट्रीय डेफ स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2026 में काव्या राजवाड़े का उत्कृष्ट प्रदर्शन

कोरिया

27वीं राष्ट्रीय सीनियर डेफ स्पोर्ट्स चैंपियनशिप एवं 10वीं राष्ट्रीय डेफ सब-जूनियर एवं जूनियर स्पोर्ट्स चैंपियनशिप 2026, चंडीगढ़ में आयोजित बैडमिंटन प्रतियोगिता में कोरिया जिले की खिलाड़ी काव्या राजवाड़े ने उत्कृष्ट प्रदर्शन करते हुए जिले को गौरवान्वित किया है।उक्त प्रतियोगिता का आयोजन 21 मार्च से 23 मार्च 2026 तक चंडीगढ़ में किया गया, जिसमें देशभर के प्रतिभागियों ने भाग लिया। काव्या राजवाड़े ने अपने शानदार खेल कौशल का प्रदर्शन करते हुए विभिन्न वर्गों में एक स्वर्ण एवं दो रजत पदक प्राप्त किए। प्राप्त जानकारी के अनुसार, काव्या ने अंडर-10 गर्ल्स सिंगल्स में स्वर्ण पदक हासिल किया, जबकि अंडर-16 गर्ल्स सिंगल्स एवं अंडर-16 मिक्सड डबल्स में रजत पदक अर्जित किए।



काव्या राजवाड़े की इस उपलब्धि से जिले में हर्ष व्यास है तथा यह अन्य खिलाड़ियों के लिए प्रेरणास्रोत बनी

हुई हैं। जिला प्रशासन ने उनकी इस सफलता पर प्रसन्नता व्यक्त करते हुए उज्ज्वल भविष्य की कामना की है।

कुंआं में डूबने से युवक की मौत, पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल



बस्तर

भानपुरी थाना क्षेत्र के खोरखोसा में एक युवक की कुंआं में डूबने से मौत हो गई। मृतक बलदेव ठाकुर (46) तुरपुरा खासपारा का निवासी है,अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक काम से ससुराल आया हुआ था। रात में खाना खाने के बाद शौच के लिए घर से निकला था, लेकिन काफी देर तक नहीं आने पर आसपास खोजबीन की गई, लेकिन कहीं पता नहीं चला। सुबह घर के बाड़ी में कुंआं से पानी लेने गए तो बलदेव



ठाकुर का शव तैरता हुआ मिला। पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर

पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है।

विधायक विक्रम मंडावी ने भैरमगढ़ ब्लॉक के चार ग्राम पंचायतों को विधायक निधि से दिया पानी टैंकर

बीजापुर

शुक्रवार को बीजापुर विधानसभा क्षेत्र के विधायक विक्रम मंडावी ने भैरमगढ़ ब्लॉक के विभिन्न ग्राम पंचायतों का दौरा किया इस दौरान उन्होंने क्षेत्र के विभिन्न गांवों के ग्रामीणों से मुलाकात की और उनकी समस्याओं तथा मांगों को सुनाकर ग्रामीणों की समस्याओं और मांगों को निराकरण करने के भरोसा दिलाया। इसके पूर्व ग्रामीणों ने विधायक विक्रम मंडावी से ग्राम पंचायतों में पानी की समस्या के समाधान के लिए पानी टैंकर की मांग की थी, ग्रामीणों की मांग के अनुरूप विधायक विक्रम मंडावी ने भैरमगढ़ ब्लॉक के ग्राम पंचायत पिटेपाल, ग्राम पंचायत मदपाल, ग्राम पंचायत बेचापाल और ग्राम पंचायत तोयनार को विधायक निधि से एक एक पानी टैंकर प्रदाय किया है। इससे इन पंचायतों में पीने के पानी की समस्या दूर होगी और ग्रामीणों को सामाजिक और धार्मिक कार्यक्रमों में भी पानी की कमी को दूर करने में मदद मिलेगी।



ग्रामीणों ने पंचायतों को पानी टैंकर दिए जाने पर विधायक विक्रम मंडावी का आभार जताया है। इस अवसर पर पूर्व जिला पंचायत सदस्य पार्वती कश्यप,

हीरालाल मण्डवी, रतन कश्यप, फगु मण्डवी और सन्तोष कडती सहित सभी सरपंच एवं ग्रामीण जन बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

NSUI देवभोग ने छात्र संघ चुनाव बहाली को लेकर पंडित श्याम शंकर मिश्र महाविद्यालय में प्राचार्य को सौंपा ज्ञापन

देवभोग

देवभोग में छात्र/छात्राओं के लोकतांत्रिक अधिकारों की आवाज एक बार फिर बुलंद हुई। हस्तु कार्यकर्ताओं ने पंडित श्याम शंकर मिश्र महाविद्यालय के प्राचार्य को ज्ञापन सौंपकर छात्र संघ चुनाव की तत्काल बहाली की मांग की।विगत कई वर्षों से चुनाव नहीं होने के कारण छात्रों की समस्याएं शासन/प्रशासन तक प्रभावी रूप से नहीं पहुंच पा रही हैं। हस्तु ने स्पष्ट कहा कि छात्र संघ चुनाव केवल प्रक्रिया नहीं, बल्कि छात्रों के अधिकार, सम्मान और नेतृत्व का आधार है।प्रदेशव्यापी चरणबद्ध आंदोलन के तहत संगठन ने निष्पक्ष, पारदर्शी और समयबद्ध



चुनाव कराने, तिथि की शीघ्र घोषणा करने और छात्र प्रतिनिधियों को अधिकार व मान्यता देने की मांग की है।हस्तु ब्लॉक अध्यक्ष सतीश साहू ने कहा []: छात्र संघ चुनाव बहाली जरूरी है, नहीं तो छात्रों के अधिकार प्रभावित हो रहे हैं। जल्द

चुनाव कराने की मांग, वरना उग्र आंदोलन की चेतावनी। इस अवसर पर धीरेन्द्र बघेल, लोकेश सोनवानी, योगेन्द्र बघेल, पिंकु सोनवानी, भोजराज बीसी, डुल्ले मरकाम, बबलू बघेल, गुड्डू जगत, चिराग साहू, हिमाचल यादव, तुकाराम,

प्रभुलाल मांडवी, राहुल डोंगरे, सुमीत यादव, खितेश पांडे, ऋतिक हरपाल, नवीन मांडवी, मनमोहन सोनवंशी, शुभम बघेल, भोगेश हरपाल, निखिल रावत, पंकज नायक, दुष्यंत नागेश सहित बड़ी संख्या में NSUI कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग जिले का प्रश्न-पत्र हुबहू एक जैसे, हर जिले में प्रश्न पत्र निर्माण समिति अलग-अलग तो प्रश्न पत्र एक कैसे? : एसोसिएशन

टीचर्स एसोसिएशन ने उच्चस्तरीय जांच कर कार्यवाही की किया मांग

कवर्धा

जिला स्तर से जारी समय सारणी अनुसार कक्षा पहली से चौथी, छठवीं व सातवीं की परीक्षा 30 मार्च से प्रारंभ हो गया है। परीक्षा प्रारंभ होना कोई नई बात नहीं है, योकि यह कार्य हर वर्ष होता है। इस वर्ष परीक्षा खास इसलिए हो गया है, योकि 30 मार्च से प्रारंभ हुए वार्षिक परीक्षा में कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग जिले के कक्षा चौथी के हिंदी, छठवीं के गणित व सातवीं के हिंदी का प्रश्न पत्र हुबहू एक जैसे मिला है। इसमें निर्देश सहित प्रश्न क्रमांक, प्रश्न व अन्य सभी जानकारी एक जैसा है। केवल तीन कक्षाओं का ही मिलान किया गया है, संभवतः कक्षा पहली से तीसरी भी मिलान करने पर एक जैसे हो सकते हैं। इन तीनों जिलों की परीक्षाएं एक साथ 30 मार्च से प्रारंभ हुए हैं। छत्तीसगढ़ टीचर्स एसोसिएशन का कहना है कि जब हर जिले में अलग-अलग प्रश्न पत्र निर्माण समिति बनाया गया है तो तीन जिले के प्रश्न पत्र हुबहू एक जैसे कैसे हो सकते हैं? इसकी उच्च स्तरीय जांच कर जिमेदारों पर उचित कार्यवाही आवश्यक है। एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ.



रमेश कुमार चन्द्रवंशी ने बताया कि लोक शिक्षण संचालनालय छत्तीसगढ़ इंद्रावती भवन रायपुर ने तीन फरवरी 2026 को जारी पत्र में समस्त जिला शिक्षा अधिकारी को निर्देशित किया है कि कक्षा पहली से चौथी, छठवीं व सातवीं के लिए जिला स्तर पर संचालन समिति, प्रश्न पत्र निर्माण समिति एवं मॉडेरेशन समिति का गठन करें। प्रश्न पत्र निर्माण समिति द्वारा तैलुप्रिंट के आधार पर प्रश्न पत्रों के तीन सेट तैयार कराया जावे। मॉडेरेशन समिति द्वारा प्रश्न पत्रों का मॉडेरेशन किया जाए। जिला स्तरीय संचालन समिति के अनुरंशंसा पर जिला शिक्षा अधिकारी द्वारा प्रश्न पत्र का मुद्रण कराया

जावे। अब सवाल यह उठता है कि जब प्रत्येक जिले के लिए प्रश्न पत्र निर्माण समिति बनाकर हर जिले को अपना प्रश्न पत्र प्रिंट कराना है, तब तीन जिले का प्रश्न पत्र हुबहू एक जैसे कैसे हो सकता है। सीधी सी बात है कि कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग में से कोई दो जिले ने अपने जिले के प्रश्न पत्र को प्रिंट कराने के बजाय दूसरे जिले के प्रश्न पत्र को ही प्रिंट करा लिया अर्थात किसी दो जिले ने प्रश्न पत्र निर्माण समिति के प्रश्नों को नहीं छपवाया, जो लोक शिक्षण संचालनालय के निर्देशों का खुला उल्लंघन है।

एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार चन्द्रवंशी, उग्रसेन चन्द्रवंशी, हेमलता शर्मा, रविन्द्र चन्द्रवंशी, केशलाल साहू, वकील बेग मिर्जा, बलदाऊ चन्द्राकर, गोकुल जायसवाल, सुरतिथा साहू, मनोज चन्द्रवंशी, राजेश तिवारी, जोहन पुनाचा, दुर्गा चन्द्रवंशी, गणेश कुरें, धरम प्रकाश मिश्रा, उमेश चन्द्रवंशी आदि ने कहा कि कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग में से कोई दो जिले ने समिति बनाने का केवल दिखावा कर लोक शिक्षण संचालनालय को अंधेरे में रखा है। अतः इसकी उच्च स्तरीय जांच कर जिमेदारों पर कार्यवाही की मांग किया है।

इतोषाक नहीं हो सकता

एसोसिएशन के जिलाध्यक्ष डॉ. रमेश कुमार चन्द्रवंशी ने कहा कि तीन जिले का प्रश्न पत्र हुबहू एक जैसे होना इोषाक नहीं हो सकता, योकि दो अलग-अलग शिक्षकों या समितियों से पचासों बार प्रश्न पत्र तैयार कराया जावे, तब भी प्रश्न एक जैसे नहीं हो सकते हैं। यह सोंची समझी जानबुझकर किया गया कार्य है।

तीनों जिले की परीक्षा समय सारणी भी एक जैसा

खास बात यह है कि तीनों जिले कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग की परीक्षा समय सारणी भी एक जैसे है। समय सारणी में कक्षा पहली से चौथी, छठवीं व सातवीं की परीक्षा तिथि व विषय समान है।

बांकी प्रश्न पत्र भी समान होने की संभावना

जिस प्रकार से परीक्षा के शुरुवात में ही तीनों जिले कबीरधाम, धमतरी व दुर्ग का पहला प्रश्न पत्र एक समान मिला है, साथ ही परीक्षा समय सारणी भी समान है, उसे देखते हुए शेष बचे विषयों के प्रश्न पत्रों के समान होने की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता।



मीना अग्रवाल नेचुरोपेथी

Spring Health - वसंत में एलर्जी नहीं, अंदर की पिघलती बर्फ है असली कारण - अरर जब वसंत आता है तो हम सर्मी, खांसी, एलर्जी, धकन या भारीपन को सीधे बाहर की हवा, धूल या पॉलिन पर डाल देते हैं। लेकिन अगर थोड़ा गहराई से समझें तो एक बिस्कुल अलग तरीर दिखता है। यह कहता है कि समस्या बाहर से कम और शरीर के अंदर ज्यादा बनती है। दरअसल, वसंत में जो दिक्कतें होती हैं, वे शरीर के अंदर जमा हुए कफके पिघलने का परिणाम होती हैं-एक ऐसी प्रि या जिसे समझना बेहद जरूरी है अगर आप इस मौसम में पिट और एनर्जेटिक रहना चाहते हैं। प्रकृति का बदलाव और शरीर की प्रतिा या-मार्च-अप्रैल यानी चैत्र और वैशाख का समय, जब मौसम तेजी से बदलता है। ठंड खतम होती है और गर्मी की शुरुआत होती है। पेड़ों पर नई पंियां आती हैं, हवा बदलती है-और इसी के साथ हमारे शरीर के अंदर भी बड़ा बदलाव होता है।

जिस तरह हम घर में 'स्पिंग लीजिंग' करते हैं, उसी तरह शरीर के अंदर भी समझी की जरूरत होती है। योकि सर्दियों में शरीर बहुत कुछ जमा करता है-और अगर यह समझ समय पर नहीं हुई, तो वही जमा हुआ मेटेडियल समस्या बन जाता है।

कफका जमा होना और 'बर्फ का पिघांत सर्दियों में शरीर में कफजमा होता है। कफ



का स्थाय होला है भारी, ठंडा, धिक्का और नम। यह कफकोई बीमारी नहीं है। यह शरीर की एक सुरक्षा परत है जो हमें ठंड से बचाती है। इसे ऐसे समझिए जैसे पहाड़ों पर जमी बर्फ-शांत, स्थिर और सुंदर। लेकिन जैसे ही वसंत आता है और तापमान बढ़ता है, वही बर्फपिघलने लगती है।

जब कफपिघलता है तो या होता है जैसे पहाड़ों की बर्फपिघलकर नीचे बहती है और अपने साथ मिट्टी, पत्थर और गंदगी लाती है, वैसे ही शरीर में जमा कफ पिघलकर पूरे सिस्टम में फैलने लगता है। इसका सबसे पहला असर पड़ता है हमारी पाचन अगिण पर। पाचन अगिण पर कफका प्रभाव पाचन अगिण का स्थाय गर्म और तीक्ष्ण होता है, जबकि कफठंडा और नम होता है। जब पिघला हुआ कफइस अगिण पर गिरता है, तो यह उसे कमजोर कर देता है।

इसे ऐसे समझिए जैसे जलती हुई अगर पान पानी या गीली मिट्टी डाल दी जाए-आग बुझने लगेगी, धुआं उठेगा। ठीक यही शरीर में होता है: पाचन धीमा हो जाता है खाना ठीक से नहीं पचता ऊर्जा बनना कम हो जाती है यही बनते हैं वसंत के आम लक्षण। कफका जमा होना और 'बर्फ का पिघांत सर्दियों में शरीर में कफजमा होता है। कफ

लगते हैं: शरीर में भारीपन सुस्ती और आलस छाती और गले में बलगम बार-बार सर्दी या एलर्जी भूख कम लगना दिमाग में धुंंधलापन यानी जो हम बाहर की वजह समझते हैं, उसकी जड़ अंदर होती है।

इयुजिटी यों गिरती है वसंत में जब शरीर में कफबढ़ता है और पाचन कमजोर होता है, तो मेटाबॉलिज्म धीमा हो जाता है। इसका सीधा असर इयूज सिस्टम पर पड़ता है। इसी वजह से: शरीर कमजोर हो जाता है बाहरी एलर्जन (धूल, पॉलिन) आसानी से असर डालते हैं छोटी-छोटी चीजें भी बड़ी समस्या बन जाती हैं

समाधान की असली दिशा: अंदर की समझी अगर समस्या अंदर की 'नमी' और कफ हैं, तो समाधान भी उसे संतुलित करना हो

वसंत में सबसे जरूरी है: कफको शांत करना शरीर की नमी को संतुलित करना पाचन अगिण को मजबूत करना और इसकी शुरुआत होती है हमारी रोज की थानी से। वसंत में आहार कैसा होना चाहिए? इस मौसम में खाना हल्का और आसानी से पचने वाला होना चाहिए। हर वो चीज कम करनी है जो कफबढ़ाती है। किन स्वादों को बढ़ाएं

कड़वा (बिटर) तीखा (पेंजेटर) कसैला (असिड्रेंटर) ये स्वाद शरीर की नमी को सुखाते हैं और कफको कम करते हैं। किन चीजों से बचें बहुत मीठा

ज्यादा तला-भुना ठंडी चीजें ज्यादा तेल और डेयरी यों खास है कड़वा और कसैला स्वाद? कसैले और कड़वे स्वाद का असर सिर्फ मुंह तक सीमित नहीं रहता। ये शरीर के टिश्यू तक जाकर अतिरिक्त नमी को कम करते हैं।

कसैला स्वाद टिश्यू को सिकोड़ता है। कड़वा स्वाद लिवर को एक्टिव करता है। दोनों मिलकर कफको कंट्रोल करते हैं इसीलिए इस मौसम में करेला, लौकी, परवल जैसी सबियां खास मानी जाती हैं। मसालों का विधान: सिर्फस्वाद नहीं, इलाज अदरक, काली मिर्च, पिपरी, अजवाइन और हींग-ये सिर्फमसाले नहीं हैं। ये शरीर में गर्मी पैदा करते हैं पाचन को तेज करते हैं लड सर्कुलैशन बढ़ाते हैं

कफको ढीला करने बाहर निकालते हैं। यानी ये बुझती हुई अगिण को पिट से जलाने का काम करते हैं। वसंत में ठंडा पानी नुकसान कर सकता है। इसलिए:गुनगुना पानी पिएं। मसाला पानी या अदरक वाला पानी लें। छाछ में जीरा या काली मिर्च डालकर लें। यह सब पाचन को सपोर्ट करते हैं और कफकम करते हैं।

शहद यों है: खास अपवाद? आमतौर पे मीठा कफबढ़ाता है, लेकिन शहद एक अलग चीज है। शहद में हल्का स्थायण होता है जो: कफको खुरचकर निकालता है। गले और छाती को साफकरता है। इसलिए सीमित मात्रा में शहद वसंत में फायदेमंद माना जाता है। पुराना अनाज यों बेहतर है वसंत मे?

आईजी रामगोपाल गर्ग ने किया महिला थाना का शुभारंभ

महिला कमांडो एवं परिवार परामर्श काउंसलरों को किया सम्मानित

जांजीगर चापा

जिले में महिला सुरक्षा और सशक्तिकरण की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठते हुये आज पुलिस महानिरीक्षक बिलासपुर रेंज रामगोपाल गर्ग द्वारा पीता काटकर महिला थाना जांजीगर का विधिवत शुभारंभ किया गया। इस कार्यक्रम में आईजी द्वारा परिवार परामर्श से जुड़े काउंसलरों को उनके उक्तृ कार्य , सम्पर्ण एवं समाज में परिवारिक विवादों के समाधान हेतु किये जा रहे सार्वजनिक प्रयासों के लिये प्रशंसा पत्र प्रदान कर सन्मानित किया गया। इस अवसर पर पुलिस महानिरीक्षक ने काउंसलरों के भूमिका की प्रशंसा करते हुये कहा कि उनका योगदान समाज में परिवारिक समस्यात एवं सौहार्द बनाये रखने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम में उपस्थित सभी अधिकारियों ने भी काउंसलरों के कार्यों की सराहना की। कार्यक्रम के दौरान आईजी ने उपस्थित महिला कमांडो टीम की सराहना करते हुये उनके सहयोग और उक्तृ कार्य की प्रशंसा की। वहीं पुलिस महानिरीक्षक ने जिले के प्रेस प्रतिनिधियों से सौहार्दपूर्ण भेंट कर पुलिस की प्रार्थमिकताओं और महिला सुरक्षा के प्रति प्रतिबद्धता को सझा किया। उन्होंने कहा कि महिला थाना न केवल महिलाओं की शिकायतों के त्वरित निराकरण में सहायक होगा , बल्कि उन्हें एक सुरक्षित और विश्वासपूर्ण वातावरण भी प्रदान करेगा। इसके अलावा आईजी ने बताया कि आम नागरिकों को साहजर अपराधों से सुरक्षित रखने के उद्देश्य से भारत सरकार के दूसंचार विभाग द्वारा -संचार साथी- मोबाइल एप एवं वॉट्सएप शुरू किया गया है। इस प्लेटफॉर्म के माध्यम से उपयोगकर्ता सदिश्य कॉल , एसएमएस व व्हाट्सएप मैसेज की शिकायत -चक्षु- सुविधा



से कर सकते हैं , वहीं एडवुकर के जरिये खोये या चोरी हुये मोबाइल की रिपोर्ट दर्ज कर ट्रैकहट्टू लॉक कराया जा सकता है। पोटल पर ड्रमप्टह्क सुविधा के माध्यम से आधार से जुड़े अनजान मोबाइल नंबंरों की जानकारी लेकर उन्हें लॉक किया जा सकता है। साथ ही Genuineness of Mobile Handset से सेकंड हैंड मोबाइल की सत्यता जांची जा सकती है। उपयोगकर्ता फ़नी इंटरनेशनल कॉल्स को लॉक करते , अपने क्षेत्र के इंटरनेट सेवा प्रदाताओं की जानकारी प्राप्त करने तथा Trusted Contact Details के जरिये बैंक/वित्तीय संस्थाओं के सत्यापित संपर्क विवरण भी प्राप्त कर सकते हैं। यह एप,ट्रुसदथ्दस एवं ड्रह्कप्लेटफ़ॉर्म पर उपलब्ध है , जिसका उद्देश्य आम नागरिकों को सुरक्षित डिजिटल वातावरण प्रदान करना है। पुलिस महानिरीक्षक द्वारा सायबर थाना जांजीगर का निरीक्षण प्रभावी एवं सुव्यवस्थित ढंग से किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने थाना परिसर की व्यवस्थाओं , उपलब्ध आधुनिक तकनीकी संसाधनों तथा सायबर अपराधों की जांच प्रक्रिया का गहनता से अवलोकन किया। आईजी ने दर्ज प्रकरणों की विस्तार से समीक्षा करते हुये शिकायतों के त्वरित एवं पारदर्शी निराकरण पर विशेष जोर दिया। उन्होंने डिजिटल साधनों के संकलन , विरलेक्षण एवं सुरक्षित रखरिखाव की

प्रक्रिया को और अधिक सुदृढ़ बनाने के निर्देश दिये। अधिकारियों एवं कर्मचारियों से संवाद करते हुये आईजी ने सायबर अपराधों की बढ़ती चुनौतियों के मद्देनजर तकनीकी दक्षता बढ़ाने , नवीनतम सॉल्टवेयर एवं टूल्स का प्रभावी उपयोग करने तथा टीमवर्क को सुदृढ़ करने की आवश्यकता बताई। साथ ही आम नागरिकों को सायबर सुरक्षा के प्रति जागरूक करने के लिये अभियान चलाने के निर्देश भी दिये ताकि ऑनलाइन ठगी , फ़नी कॉल एवं सोशल मीडिया से जुड़े अपराधों पर प्रभावी नियंत्रण पाया जा सके।

आईजी ने साहजर थाना जांजीगर का निरीक्षण किया , जहां उन्होंने उपस्थित नागरिकों को साहजर जागरूकता , साइबर धोखाधड़ी से बचाव एवं सोशल मीडिया के सुरक्षित उपयोग के संबंध में विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने आमजन से अपील की कि वे डिजिटल माध्यमों का उपयोग करते समय सतर्कता बरतें और किसी भी सदिश्य गतिविधि कोप तुरंत सूचना पुलिस को दें। इस दौरान आईजी ने जिले के आदिवासी गांव समाज के लोगों से भेंट किया , समाज के द्वारा शराब बनाना छेड़ खरोजगार को राह अपनाने की उनके कार्यों की सराहना की। उन्होंने जिले के गणमान्य नागरिकों की भी सन्मानित किया। इस अवसर पर आईजी ने नागरिकों द्वारा समाज के विभिन्न क्षेत्रों में किये जा

रहे उक्तृ कार्यों , सामाजिक सेवाओं और योगदान की सराहना की। उन्होंने बताया कि ऐसे नागरिक समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और उनकी सेवाये युवाओं के लिये प्रेरणा का स्रोत हैं। सन्मानित नागरिकों ने अपने अनुभव साझा किये और समाज में सुधार एवं सहयोग की दिशा में अपने प्रयासों को आगे बढ़ाने का संकल्प व्यक्त किया। आईजी ने इस अवसर पर कहा कि समाज के हर वर्ग का सहयोग और सक्रिय भागीदारी पुलिस एवं प्रशासनिक कार्यों को भी प्रभावी बनाने में सहायक होती है। कार्यक्रम के अंत में सन्मानित नागरिकों को प्रतीक चिन्ह और प्रशस्ति पत्र प्रदान किये गये , जिससे उनके योगदान को मान्यता और प्रोत्साहन मिला। इस गरिमामयी अवसर पर जांजीगर चापा जिले के कलेक्टर कमनेजय महेबे , जांजीगर चापा पुलिस अधीक्षक विजय कुमार पाण्डेय , सकि जिला के पुलिस अधीक्षक प्रफुल कुमार ठाकुर , अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक यातायात जांजीगर उदयन बेहार , डीएसपी मुण्ियालय विजय कुमार पैकरा , एसडीओपी अकलतरा प्रदीप कुमार सोरी , सीएसपी जांजीगर योगिताबाली खापरे , डीएसपी अजक सतरुपा तारय , रक्षित निरीक्षक प्रदीप कुमार जोशी सहित क्षेत्र के जनप्रतिनिधि गणमान्य , नागरिकण उपस्थित थे।

नागरिकों में आक्रोश, प्रशासन पर उठे सवाल

लाखों खर्च, फिर भी बदहाल : बाधा तालाब गार्डन में झाड़ियों के बीच खेल रहे मासूम, हादसे का बड़ा खतरा

धमतरी

नगर पंचायत नगरी द्वारा शहरवासियों को बेहतर मनोरंजन और बच्चों के सुरक्षित खेलीकृत का स्थान उपलब्ध कराने के उद्देश्य से बाधा तालाब क्षेत्र में लाखों रुपए की लागत से विकसित किया गया गार्डन आज बदहाली और लापरवाही की मिसाल बन चुका है। जिस गार्डन को नगर का आकर्षण बनना था, वह अब अव्यवस्था, गंदगी और खतरों का अड्डा बन गया है।

झूले बने जोखिम का कारण

गार्डन में लगाए गए झूले और खेल उपकरण बच्चों के लिए सुरक्षित मनोरंजन का साधन होने चाहिए थे, लेकिन वर्तमान हालात में यही उपकरण हादसे की वजह बन सकते हैं। झूलों के आसपास घनी काटेदार झाड़ियां, जंगली घास और गंदगी फैली हुई है। मासूम बच्चे अनजाने में इन्हीं झूलों पर खेलते हैं, जहां छोटी सी चूक भी गंभीर चोट में बदल सकती है।

न सुरक्षा, न निगरानी —खुले में खतरा

गार्डन में सुरक्षा व्यवस्था पूरी तरह नदारद है। न झूलों के आसपास कोई सुरक्षा घेरा है, न चेतावनी बोर्ड और न ही कोई देखरेख करने वाला कर्मचारी मौजूद है। बच्चे बिना किसी निगरानी के खेल रहे हैं,



जिससे अधिभावकों की चिंता लगातार बढ़ रही है।

लाखों की लागत पर लापरवाही भारी

स्थानीय लोगों के अनुसार गार्डन निर्माण में शासन द्वारा लाखों रुपए खर्च किए गए, लेकिन रखरखाव के अभाव में पूरा परिसर उपेक्षा का शिकार हो गया है। नियमित साफ़ीसफाई, घास काटाई और झाड़ियों की कटाई नहीं होने से गार्डन धीरे-धीरे खंडहर में तर्ीदील होता जा रहा है।

लाइटें लगीं, पर अंधेरे में डूबा तालाब परिसर

तालाब के चारों ओर लाखों की लागत से स्ट्रीट लाइटें लगाई गई हैं, लेकिन

अधिकांश लाइटें बंद पड़ी हैं। शाम होते ही पूरा क्षेत्र अंधेरे में डूब जाता है, जिससे न सिर्फ दुर्घटना का खतरा बढ़ता है बल्कि असामाजिक तत्वों की गतिविधियों की आशंका भी बनी रहती है। यह स्थिति नगर पंचायत की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े करती है।

क्षेत्रवासियों में नगर पंचायत प्रशासन के प्रति गहरी नाराजगी है। लोगों का कहना है कि यदि समय रहते सुधार नहीं किया गया, तो यह गार्डन किसी बड़े हादसे का कारण बन सकता है। बच्चों की सुरक्षा के साथ इस तरह की लापरवाही को लेकर नागरिकों में आक्रोश बढ़ता जा रहा है।

तुरंत नगर पंचायत को एवशन लेने की मांग

नागरिकों ने प्रशासन से मांग की है

चंद घंटों मे कोण्डागांव पुलिस ने किया झपटमारी करने वाली आरोपिया को गिरफ्तार, भेजा गया आरोपिया को जेल

कोंडागांव

मामले का सक्षिप्त विवरण इस प्रकार है कि दिनांक 30.03.2026 को प्रार्थिया ईन्दरा निवासी गुहाबोरण्ड पोस्ट रांधना थाना फ़सर्गांव जिला कोण्डागांव ने थाना कोंडागांव में आकर रिपोर्ट दर्ज कराया कि वह विकास नगर स्टेडियम ग्राउंड कोण्डागांव में दिनांक 28\30/03/2026 तक चल रहे तीन दिवसीय सदगुरू कबीर संत समागम समारोह में आई थी वहीं उपस्थित एक महिला भीड़ भाड़ का फ़यदा उठाकर प्रार्थिया के गले में पहने सोने का हार को छिना झपटी करके मंगलसूत्र को निकालकर भाग रही है, की रिपोर्ट पर थाना कोण्डागांव में अपराध क्रमांक 88/2026 धारा 304(2) बीएनएस. के तहत पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। घटना की गंभीरता को देखते हुये पुलिस अधीक्षक पंकज चन्द्रा, (भा0पु0से0) के निर्देशन में अति0 पुलिस अधीक्षक कपील चन्द्रा के मार्गदर्शन में एवं पुलिस अनुविभागीय अधिकारी कोण्डागांव रूपेश कुमार के पर्वेक्षण में थाना प्रभारी निरी. सौरभ उपाध्याय को नेतृत्व में तत्काल टीम को घटना स्थल रवाना कर आरोपिया को अभिश्क्षा में लिया गया।आरोपिया उन्ध्रिध धमधे पति मन्तू धमधे उम्र 30 वर्ष जाति मराठी निवासी जयराम नगर भनेसर थाना मस्तुरी जिला बिलासपुर (छ.ग.) को पूछताछ करने पर अपराध करना स्वीकार करने व आरोपी के विरुद्ध अपराध सबूत पाये जाने से गिरफ़्तार कर उसके कपड़े से 01 नग सोने की मंगलसूत्र



बिलासपुर (छ0ग0) हाल पता पिपरसर्ी थाना अकलतरा जिला जांजीगर छ.ग.विवेचना के दौरान घटना के संबंध में आरोपिया ज्योति धमधे पति मन्तू धमधे उम्र 30 वर्ष जाति मराठी निवासी जयराम नगर भनेसर थाना मस्तुरी जिला बिलासपुर (छग0) हाल पता पिपरसर्ी थाना अकलतरा जिला जांजीगर चांपा (छ.ग.) को पूछताछ करने पर अपराध करना स्वीकार करने व आरोपी के विरुद्ध अपराध सबूत पाये जाने से गिरफ्तार कर उसके कपड़े से 01 नग सोने की मंगलसूत्र

किमती करीबन 50000/ रुपये को जप्त कर आरोपिया को रिमाण्ड पर न्यायालय पेश किया गया जहाँ से माननीय न्यायालय के आदेश पर जेल दाखिल किया गया।उक्त संपूर्ण कार्यवाही मे थाना प्रभारी निरीक्षक सौरभ उपाध्याय, उप निरी. संजय कुमार वड्डे, स.अनि. शांति यादव, म0 प्र.आर0 276 आशो मरकाम, महिला आर. श्यामबती नाग, ममता प्रधान एवं सायबर सेल से स.उ.नि. सुरेंद्र बबेल, आर. संतोष कोडोपी, अजय देवांगन का विशेष योगदान रहा।

माओवादी मुक्ति से शांति एवं संतुलन की नई संभावनाएं



ललित रंग

माओवादी मुक्ति का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि देश के उन क्षेत्रों में शांति और स्थिरता स्थापित होगी, जो लंबे समय से हिंसा की चपेट में रहे हैं। जब बंटूकें खामोश होंगी, तब विकास की आवाज बुलंद होगी। सड़कें बनेंगी, स्कूल खुलेंगे, अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ेंगी और सबसे महत्वपूर्ण, लोगों के जीवन में सुरक्षा और विश्वास का संचार होगा।

भारत जैसे विशाल, विविधतापूर्ण और लोकतांत्रिक राष्ट्र के सामने आंतरिक सुरक्षा की चुनौतियां हमेशा से बहुआयामी रही हैं। इन चुनौतियों में नक्सलवाद या माओवादी हिंसा एक ऐसी समस्या रही, जिसने दशकों तक देश की आंतरिक शांति, विकास और सुशासन को गंभीर रूप से प्रभावित किया। विशेषकर छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा, बिहार और आंध्र प्रदेश के आदिवासी बहुल क्षेत्रों में माओवादी गतिविधियों ने न केवल विकास को अवरुद्ध किया, बल्कि हजारों निर्दोष नागरिकों और सुरक्षाकर्मियों की जान भी ली। लेकिन आज जब बस्तर जैसे माओवादी गढ़ से 25 लाख के इनामी सरगना पापा राव का अपने साथियों सहित आत्मसमर्पण करना एक निर्णायक मोड़ के रूप में सामने आया है, तब यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भारत माओवादी मुक्ति की ऐतिहासिक दहलीज पर खड़ा है। नक्सलवाद की जड़ें सामाजिक-आर्थिक असमानता, उपेक्षा और शोषण में रही हैं, लेकिन समय के साथ यह आंदोलन अपने मूल उद्देश्यों से भटककर एक हिंसक और विध्वंसकारी विचारधारा में बदल गया। माओवादी संगठन न केवल विकास कार्यों में बाधा डालते रहे, बल्कि उन्होंने स्थानीय लोगों को भय और हिंसा के माध्यम से नियंत्रित किया। स्कूल, सड़क, स्वास्थ्य केंद्र जैसे बुनियादी ढांचे को नष्ट करना उनकी रणनीति का हिस्सा बन गया था। इससे यह स्पष्ट हो गया कि यह आंदोलन अब जनहित का नहीं, बल्कि सत्ता और नियंत्रण का माध्यम बन चुका है। भारत सरकार द्वारा 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सलवाद/माओवाद से मुक्त करने का जो लक्ष्य निर्धारित किया गया था, वह अब लगभग अपनी अंतिम अवस्था में पहुंचता दिखाई दे रहा है। पिछले एक दशक में 10,000 से अधिक माओवादियों के आत्मसमर्पण, सुरक्षा बलों की आक्रामक एवं रणनीतिक कार्रवाई तथा प्रभावित क्षेत्रों में तेजी से हुए विकास कार्यों ने माओवादी आंदोलन की जड़ों को कमजोर कर दिया है। छत्तीसगढ़, झारखंड, ओडिशा और महाराष्ट्र जैसे राज्यों में माओवादी हिंसा की घटनाओं में उल्लेखनीय कमी आई है। विशेष रूप से शीर्ष नेतृत्व के आत्मसमर्पण, जैसे दंडकारण्य स्पेशल जोनल कमेटी के सदस्यों के सरेंडर ने संगठन को नेतृत्वहीन कर दिया, जिससे माओवादी संरचना भीतर से कमजोर पड़ गई। इस सफलता के पीछे सरकार की बहुआयामी रणनीति रही, जिसमें केवल सैन्य-पुलिस कार्रवाई ही नहीं, बल्कि विकास, पुनर्वास और प्रशासनिक पहुंच को भी समान महत्व दिया गया। रेड



कोरिडोर क्षेत्रों में सड़कों और पुलों का निर्माण, मोबाइल टावरों के माध्यम से 4जी नेटवर्क का विस्तार, स्कूलों और आईटीआई संस्थानों की स्थापना ने इन क्षेत्रों को मुख्यधारा से जोड़ा। वहीं द्वाफोर्टफाइड पुलिस स्टेशनोंह्क की रणनीति के माध्यम से सुरक्षा बलों ने माओवादियों के गढ़ों में घुसकर निर्णायक कार्रवाई की। आत्मसमर्पण करने वाले माओवादियों के लिए पुनर्वास नीति के तहत आर्थिक सहायता, रोजगार और समाज में पुनर्स्थापना की व्यवस्था ने भी माओवादी कैडर को हथियार छोड़ने के लिए प्रेरित किया। यह समर्पित रणनीति, दूरदर्शिता और दृढ़ राजनीतिक इच्छाशक्ति का परिणाम है कि देश आज नक्सलवाद के अंत के ऐतिहासिक चरण के निकट खड़ा दिखाई दे रहा है। निश्चित ही प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में केंद्र सरकार ने इस समस्या के समाधान के लिए बहुआयामी और दृढ़ रणनीति अपनाई। गृहमंत्री अमित शाह की सूझबूझ और स्पष्ट दृष्टिकोण ने इस अभियान को एक नई दिशा दी। सरकार ने एक ओर जहां सुरक्षा बलों को आधुनिक तकनीक, बेहतर प्रशिक्षण और संसाधनों से सशक्त किया, वहीं दूसरी ओर विकास योजनाओं को भी गति दी। ह्यसुरक्षा और विकासह्क के इस दोहरे दृष्टिकोण ने माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में सकारात्मक परिवर्तन की नींव रखी। पिछले कुछ वर्षों में सुरक्षाबलों द्वारा चलाए गए सघन अभियानों ने माओवादी नेटवर्क को गहराई से कमजोर किया है। बस्तर, जो कभी माओवादियों का सबसे मजबूत गढ़ माना जाता था, वहां

आज आत्मसमर्पण की घटनाएं बढ़ रही हैं। पापा राव जैसे शीर्ष माओवादी नेता का आत्मसमर्पण इस बात का संकेत है कि माओवादी संगठन अब अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रहे हैं। यह केवल एक व्यक्ति का आत्मसमर्पण नहीं, बल्कि एक विचारधारा के पतन का प्रतीक है। माओवादी मुक्ति का सबसे बड़ा लाभ यह होगा कि देश के उन क्षेत्रों में शांति और स्थिरता स्थापित होगी, जो लंबे समय से हिंसा की चपेट में रहे हैं। जब बंटूकें खामोश होंगी, तब विकास की आवाज बुलंद होगी। सड़कें बनेंगी, स्कूल खुलेंगे, अस्पतालों में सुविधाएं बढ़ेंगी और सबसे महत्वपूर्ण, लोगों के जीवन में सुरक्षा और विश्वास का संचार होगा। आदिवासी और ग्रामीण समुदाय, जो अब तक भय और असुरक्षा में जी रहे थे, वे अब अपने अधिकारों और अवसरों का पूर्ण लाभ उठा सकेंगे। इसके साथ ही, माओवादी हिंसा के समाप्त होने से भारत की आंतरिक सुरक्षा मजबूत होगी। जब देश के भीतर शांति होगी, तब ही बाहरी खतरों का प्रभावी ढंग से सामना किया जा सकता है। नक्सलवाद जैसी समस्याएं अक्सर विदेशी शक्तियों और असामाजिक तत्वों के लिए भी अवसर प्रदान करती हैं, जिन्हें समाप्त करना राष्ट्रीय हित में अत्यंत आवश्यक है। इस दृष्टि से माओवादी मुक्ति न केवल आंतरिक, बल्कि सामरिक रूप से भी महत्वपूर्ण है। आदर्श शासन व्यवस्था की स्थापना के लिए कानून का शासन, पारदर्शिता, जवाबदेही और विकास की समान पहुंच

आवश्यक होती है। माओवादी प्रभाव वाले क्षेत्रों में इन सभी तत्वों का अभाव था। वहां प्रशासन की पहुंच सीमित थी और लोकतांत्रिक संस्थाएं प्रभावी रूप से कार्य नहीं कर पा रही थीं। लेकिन अब जब माओवादी प्रभाव घट रहा है, तब सरकार के लिए यह अवसर है कि वह इन क्षेत्रों में सुशासन की मजबूत नींव रखे। पंचायतों को सशक्त किया जाए, स्थानीय नेतृत्व को प्रोत्साहित किया जाए और जनभागीदारी को बढ़ावा दिया जाए। यह भी आवश्यक है कि माओवादी विचारधारा के प्रभाव को केवल सुरक्षा उपायों से ही नहीं, बल्कि वैचारिक स्तर पर भी चुनौती दी जाए। शिक्षा, जागरूकता और संवाद के माध्यम से लोगों को शांतिपूर्ण होना कि हिंसा किसी भी समस्या का समाधान नहीं हो सकती। लोकतंत्र में परिवर्तन का मार्ग शांतिपूर्ण और संवैधानिक होता है। इस दिशा में समाज, सरकार और नागरिक संगठनों को मिलकर प्रयास करना होगा। माओवादी मुक्ति के इस दौर में यह भी ध्यान रखना होगा कि जिन कारणों से यह समस्या उत्पन्न हुई थी, वे दोबारा न उभरें। सामाजिक न्याय, आर्थिक समानता और विकास की समावेशी नीति को प्राथमिकता देना आवश्यक है। आदिवासी क्षेत्रों में उनकी संस्कृति, पहचान और अधिकारों का सम्मान करते हुए विकास की योजनाएं लागू की जानी चाहिए। केवल भौतिक विकास ही नहीं, बल्कि सामाजिक और सांस्कृतिक सशक्तिकरण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और गृहमंत्री अमित शाह के नेतृत्व में जिस दृढ़ता और दूरदर्शिता के साथ माओवादी समस्या का समाधान किया जा रहा है, वह न केवल वर्तमान के लिए, बल्कि भविष्य के लिए भी एक मार्गदर्शक है। यह दिखाता है कि यदि राजनीतिक इच्छाशक्ति मजबूत हो, रणनीति स्पष्ट हो और कार्यान्वयन प्रभावी हो, तो कोई भी समस्या असाध्य नहीं है। निश्चिततौर पर माओवादी मुक्ति केवल एक सुरक्षा उपलब्धि नहीं है, बल्कि यह भारत के लोकतंत्र, विकास और सुशासन की जीत है। यह उस विश्वास का प्रतीक है कि भारत अपने आंतरिक संघर्षों को शांतिपूर्ण और निर्णायक ढंग से सुलझाने में सक्षम है। अब समय है कि इस उपलब्धि को स्थायी बनाया जाए और देश के हर कोने में शांति, समृद्धि और संतुलन का वातावरण स्थापित किया जाए। जब हर नागरिक सुरक्षित, सम्मानित और शांतिपूर्ण महसूस करेगा, तभी सच्चे अर्थ में एक आदर्श शासन व्यवस्था का निर्माण संभव हो सकेगा।

संपादकीय

मां-बाप की कद्र कानूनी बाध्यता

वैसे तो यह किसी भी सभ्य समाज के लिये सामानाक है कि जन्म देकर पालन-पोषण करने वाले मां-बाप की जीवन की सांझ में बेकद्री की जाए। फिर गुजारे भते के लिये कानून-प्रशासन से मांग करनी पड़े। लेकिन यह मौजूदा समय की हकीकत है कि ऐसे किस्से गाहे-बगाहे सुनने को मिलते हैं। सही मायनों में बुढ़ापा अपने आप में बड़ी चुनौती है, जब शरीर की क्षमताओं का ह्रास होने लगता है और आय के स्रोत लगभग खत्म होने लगते हैं। सेवानिवृत्ति की जमा-पूंजी बच्चों की पढ़ाई, शादी-ब्याह और मकान बनाने में खर्च हो जाती है। उन लोगों की स्थिति तो और दुखद हो जाती है जो निजी क्षेत्र या किसी प्राइवेट काम-धंधे में लगे रहते हैं। उन्हें तो पेंशन भी नहीं मिलती। वहीं धीरे-धीरे अक्षम होता शरीर उम्रदराज होने पर लगने वाली बीमारियों का घर बन जाता है। ऐसे स्थिति में अपने जब मां-बाप की देखभाल न करें तो यह एक सामाजिक अपराध ही कहा जाएगा। जाहिर है, जब खून के रिश्ते साथ न दें तो कानून ही अंतिम सहारा रह जाता है। इस दिशा में तेलंगाना विधानसभा में पारित तेलंगाना कर्मचारी जवाबदेही और माता-पिता सहायता निगमानी विधेयक 2026 पूरे देश के बुजुर्गों के लिये एक नई उम्मीद जगाता है। इस राज्य की विधानसभा ने बीते रविवार वरिष्ठ नागरिकों की वित्तीय सुरक्षा सुनिश्चित करने के उद्देश्य से यह विधेयक पारित किया। निस्संदेह, देश में पहले से एक राष्ट्रीय कानून 'माता-पिता और वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण एवं कल्याण अधिनियम 2007' मौजूद है, लेकिन नये विधेयक का दायरा विस्तृत है। जो पहले कानून की कुछ विसंगतियों को दूर करता है। महत्वपूर्ण बात यह है कि राज्य के नये विधेयक के दायरे में जनप्रतिनिधियों और निजी क्षेत्र के कर्मचारियों को भी शामिल किया गया है। यह विधेयक जन प्रतिनिधियों, सरकारी व निजी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य रूप से बुजुर्ग माता-पिता की देखभाल करना सुनिश्चित करता है। तेलंगाना विधानसभा में पारित यह विधेयक यकीनी बनाता है कि यदि बच्चे मां-बाप की देखभाल नहीं करते तो उनके वेतन से पंद्रह फीसदी या दस हजार रुपये, जो भी कम है, शिकायत मिलने पर माता-पिता को देय राशि के रूप में काटे जाएंगे। उल्लेखनीय है कि अपनी चल-अचल संपत्ति बेटे के नाम करने वाले मशहूर कारोबारी विजयवत सिंघानिया की बेदखली का एक मामला चर्चा में आया था। इस घटना ने पूरे देश का ध्यान खींचा और देश में प्रभावी कानून बनाए जाने की चर्चा तेज हुई थी। यह सुखद ही है कि तेलंगाना सरकार ने सामाजिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए यह पहल की। सरकार का कथन है कि समाज में नैतिक दायित्वों को बढ़ावा देना इस विधेयक का मकसद है। यदि बच्चे अपना दायित्व नहीं निभाते तो कानून के जरिये उन्हें इसके लिये बाध्य किया जा सकेगा।

वितन-मनन

अपनेपन का प्रेम असली प्रेम

जब प्रेम बहुत गहरा होता है, तब तुम किसी भी गलतफहमी के लिए पूरी जिम्मेवारी लेते हो। पल भर के लिए ऊपरी तौर से नाराजगी व्यक्त कर सकते हो, परन्तु जब इस नाराजगी को दिल से महसूस नहीं करते, तब तुम एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ पाते हो। तब तुम उस अवस्था में हो जहां सभी समस्याएं और मत-भेद मिट जाते हैं और केवल प्रेम झलकता है। प्रायः हम मतभेदों में उलझे रहते हैं क्योंकि अपने वास्तविक स्वभाव से दूर हो गए हैं। प्रेम के नाम पर हम दूसरों को इच्छानुसार चलाना चाहते हैं। यह स्वाभाविक है कि जब हम किसी से प्रेम करते हैं तो हम चाहते हैं कि वे त्रुटिहीन हो। तुम पहाड़ी के ऊपर से जमीन के गड्ढों को नहीं देख सकते। इसी प्रकार, उन्नत चेतना की अवस्था से दूसरों की त्रुटियां नजर नहीं आती। परन्तु जमीन आकर गड्ढों को (दोषों को) देख सकते हो। और गड्ढों को भरना चाहते हो तो उन्हें देखना ही होगा। हवा में रहकर तुम घर नहीं बना सकते। गड्ढों को देखे बिना, उनको भरे बिना, कंकड़-पत्थर हटाए बिना, जमीन को नहीं जोत सकते। इसीलिए जब तुम किसी से प्रेम करते हो और उनमें दोष ही दोष देखते हो तो उनके साथ रहो और गड्ढे भरने में उनकी मदद करो। यही ज्ञान है। तूम किसी को प्यार क्यों करते हो? क्या उनके गुणों के लिए या मित्रता और अपनेपन के कारण? अपनत्व महसूस किए बिना, केवल उनके गुणों के लिए, तुम किसी से प्रेम कर सकते हो! इस प्रकार का प्रेम प्रतिस्पर्धा और ईर्ष्या पैदा करता है। परन्तु जब प्रेम आत्मीयता के कारण होता है, तब ऐसा नहीं होता। जब तुम किसी को उनके गुणों के लिए चाहते हो और जब उनके गुणों में बदलाव आता है, या जब तुम उनके गुणों के आदी हो जाते हो, तुम्हारा प्रेम भी बदल जाता है। परन्तु प्रेम यदि अपनत्व के भाव से है, क्योंकि वे तुम्हारे अपने हैं, तब वह प्रेम जम-जमन्तारों तक रहता है।



योगेश कुमार गोयल

त नाव भरे दौर में मुस्कान का पर्व है मूर्ख दिवस....

विश्वभर में 1 अप्रैल को मनाया जाने वाला 'मूर्ख दिवस' केवल एक साधारण दिन नहीं बल्कि हंसी, उल्लास और हल्के-फुल्के फ्लेन्को का ऐसा अवसर है, जो लोगों को रोजमरा की तनावपूर्ण जिंदगी से कुछ पल के लिए राहत प्रदान करता है। इस दिन छोटे-बड़े, बच्चे-बुजुर्ग, सभी एक-दूसरे के साथ मजाक करते हैं और बिना किसी दुर्भावना के हंसी-ठिठोली के माध्यम से माहौल को खुशनुमा बना देते हैं। इस दिवस की सबसे खास बात यह है कि इसमें किए जाने वाले मजाक आमतौर पर हानिरहित मिलते हैं। 1957 में बीबीसी ने 'स्पेगेटी ट्री' की खबर प्रसारित की, जिसमें बताया गया कि स्विट्जरलैंड में पेड़ों पर स्पेगेटी उगती है। हजारों लोगों ने इस पर विश्वास कर लिया। इसी तरह 1996 में बर्ग किंग ने 'लेफ्ट-हैंड व्हीपर' बर्गर की घोषणा कर लोगों



संजय गोस्वामी

ज्यो तिथियों के सटीक गणना के अनुसार हनुमान जी का जन्म 58 हजार 112 वर्ष पहले त्रेतायुग के अंतिम चरण में चैत्र पूर्णिमा को मंगलवार के दिन चित्रा नक्षत्र व मेष लग्न के योग में सुबह 6.03 बजे भारत देश में आज के झारखण्ड राज्य के मुमला जिले के अंजन नाम के छोटे से पहाड़ी गाँव के एक युग्म में हुआ था, कहा जाता है किव्यों की घोर तपस्या के बाद माता अंजना ने एक विलक्षण बुद्धि के बालक को जन्म दिया। शत्रु शैल्युग पूर्णिमा मंगलवार को मध्य रात्रि में अंजना के गर्भ से भगवान शिव अपने रुद्रदेह को त्याग कर वानररूप हनुमान बन कर अवतरित हुए। भगवान शिव ने ग्यारहवें रुद्र के रूप में अंजना के गर्भ से जन्म लिया, इसलिये शास्त्रों में हनुमानजी को रुद्रावतार कहा गया है। माता अंजना पूर्वजन्म में पुंजिकस्थली नाम की अप्सरा थी। रावण जब देवलोक गया तो इसके रूप और तेज को देख कर मोहित हो गया। रावण ने कामुक होकर इसका हाथ पकड़ लिया।अपना हाथ छुड़ा कर क्रोधित पुंजिकस्थली सीधे ब्रह्माजी के पास गई और कहा, 'आपका वरदान पाकर ऐसे दुष्ट स्वभाव के लोग देवलोक में विचरण करते रहते हैं और आपके शरणागतों के साथ अत्याचार, अनाचार करते हैं।' ब्रह्मा-जी ने रावण से कहा, 'यदि आज के बाद तुम किसी परायी स्त्री को बुरी नजर से देखोगे तो तुम्हारे सिरके टुकड़े-टुकड़े हो जायेंगे।' अप्सरा इससे संतुष्ट नहीं हुई। उसने ब्रह्माजी से कहा, 'मैं इससे स्वयं बदला लूँगी।' अत्रि मुनि के शाप के कारण इसी पुंजिकस्थली नाम की अप्सरा ने कुंजर वानर के यहाँ जन्म लिया जिसका नाम अंजना (अंजनी) रखा गया। अंजना का विवाह वानरराज केसरी से हुआ। केसरी राक्षसों को मार कर

मूर्ख दिवस: हमारा मजाक न बने किसी की पीड़ा का कारण



का शिकार बन जाते हैं, जिससे वातावरण और भी मनोरंजक हो उठता है। यह परंपरा केवल आम लोगों तक सीमित नहीं रही है बल्कि बड़े मीडिया संस्थान, प्रतिष्ठित कंपनियां और नामी ब्रांड भी इस दिन अनेकों और रचनात्मक 'प्लैक्स' के जरिए लोगों का मनोरंजन करते हैं। इतिहास में कई रोचक उदाहरण मिलते हैं। 1957 में बीबीसी ने 'स्पेगेटी ट्री' की खबर प्रसारित की, जिसमें बताया गया कि स्विट्जरलैंड में पेड़ों पर स्पेगेटी उगती है। हजारों लोगों ने इस पर विश्वास कर लिया। इसी तरह 1996 में बर्ग किंग ने 'लेफ्ट-हैंड व्हीपर' बर्गर की घोषणा कर लोगों

को चौंका दिया। डिजिटल युग में यह परंपरा और भी व्यापक हो गई है। सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्लेटफॉर्मों के जरिए ऐसे मजाक कुछ ही मिनटों में लाखों लोगों तक पहुंच जाते हैं। हालांकि, कभी-कभी लोग सच्ची खबरों को भी 'अप्रैल फूल' समझकर नजरअंदाज कर देते हैं और बाद में पछताते हैं। मूर्ख दिवस की उत्पत्ति को लेकर विभिन्न मत हैं। एक प्रचलित धारणा के अनुसार, प्राचीन समय में कई देशों में नया वर्ष 1 अप्रैल से शुरू होता था। जब कैलेंडर प्रणाली में बदलाव हुआ और नए साल की शुरुआत 1 जनवरी से होने लगी, तब भी कुछ लोग पुरानी परंपरा

भगवान राम के सबसे बड़े भक्त हैं हनुमान

ऋषियों की रक्षा किया करते थे। ऋषियों ने प्रसन्न होकर केसरीजी को आशीर्वाद दिया कि तुम्हारा होने वाला बालक बल, बुद्धि और विद्या से परिपूर्ण होगा। बड़ा होकर श्रीराम का अन्यन्त भक्त बनेगा व सारे संसार में पूजनीय एवं वंदनीय होगा।अंजना और केसरी सुमेरु पर्वत से किर्किंधा चले गये। अंजना ने मर्तग ऋषि के आश्रम में एक हजार वर्ष तक तपस्या की। इसके बाद सौ वर्ष तक वैकटेश्वर पर्वत पर तपस्या की। इस अवधि में केसरीजी ने उन्हें अपना पूर्ण सहयोग प्रदान किया। जब अंजना तपस्या कर रही थी तो त्रिदेव उनके पास पहुँचे। अंजना ने उनसे वरदान माँगा कि मेरे होने वाले पुत्र की सभी शक्तियाँ आपकी शक्तियों से बढ़ कर हों । पुत्र इस संसार में असुरों का नाश करे और देवताओं की रक्षा करे। त्रिदेव ने तथारुक्त कह दिया सृष्टि के संहारक भगवान रुद्र ने अपने प्रिय हरि की अधिकांशिक सेवा करने व कलिकाल में भक्तों की रक्षा करने के लिये पवनदेव के पुत्र और वानरराज केसरी के क्षेत्रज पुत्र के रूप में अवतरित होने का निर्णय लिया। पवनदेव ने भी अंजना को वरदान दिया कि मैं अपनी बलरूपी वह शक्ति जिससे तीनों लोक कंपायमान हो जाते हैं, तुम्हारे पुत्र को प्रदान करूँगा।जन्म के समय इनका नाम मारुति रखा गया। यह माना जाता है कि, भगवान शिव ने पृथ्वी पर मनुष्य के रूप पुनर्जन्म 11वें रुद्र अवतार के रूप में हनुमान वनकर जन्म लिया; क्योंकि वे अपने वास्तविक रूप में भगवान श्री राम की सेवा नहीं कर सकते थे। मारुति को भूख लगी लेकिन कुछ खिलाने-पिलाने के लिये अंजना माता घर पर नहीं थी। उसी समय उदयाचल से उदित हो रहे अरुणाम सूर्य को मारुति ने मीठा फल समझ लिया। वे तुरन्त आकाश में उड़े और सूर्य तक पहुँच गए। मारुति को सूर्य की ऊष्मा से बचाने के लिये पवनदेव उसी समय भी पीछे-पीछे चल रहे थे।राहु भी अपनी सेना सहित वहाँ पहुँच गया। मारुति ने इसे भी मीठा फल समझ लिया और उस पर लपके। राहु शिकायत करने रुद्रदेव के पास पहुँच गया। इस बीच मारुति ने राहु की राक्षसी सेना का अंत कर दिया। मारुति ने सूर्य को मीठा फल समझ कर अपने मुख में रख लिया। इन्द्र ने मारुति पर वज्र से प्रहार किया तो वे मूर्छित हो गये। यह देखकर पवनदेव को क्रोध आ गया। उन्होंने तुरन्त प्राणवायु का संचार बंद कर दिया। चारों ओर हाहाकार मचा गया। ब्रह्माजी

सभी देवताओं के साथ पवनदेव के पास पहुँचे। उन्होंने मारुति को स्पर्श किया तो उन्हें होश आ गया।मारुति को बाल्यवस्था में ही इन्द्र, कुबेर, यम, वरुण, ब्रह्मा आदि देवताओं ने अनेकों वरदान दियेऔर आशीर्वाद दिया कि तुम पर सभी अस्त्र-शस्त्र प्रभावहीन रहेंगे। देवताओं ने इन्हें इच्छा मृत्यु का वरदान भी दिया। सूर्यदेव ने गुरु बनकर विद्याज्ञान देने का वचन दिया। ब्रह्माजी ने पवनदेव से कहा, 'तुम्हारा पुत्र शत्रुओं पर हमेशा भारी पड़ेगा, युद्ध मेंअजेय रहेगा। श्रीराम-रावण युद्ध में अपारशीर्य दिखा कर श्रीराम को अति प्रसन्नता प्रदान करेगा।' बाल-लीला करते समय मारुति ने राहु की सेना और साठ हजार मंदार नाम के राक्षसों का भी संहार कर दिया। इसलिये इनका एक नाम'राक्षसांतक' भी है।इन्द्र के वज्र प्रहार से मारुति की हनु (जबड़ा) टेढ़ी हो गई। हनु वक्र हो जाने से इनका नाम हनुमान हो गया। ऐसे कारणों की मनुष्य को ब्रह्म से विमुख करते हैं, उनका हनन कर सही मार्ग की ओर अग्रसर करने वाले को भी हनु (हनन करने वाला) कहते हैं। अपनी इस विशेषता के कारण भी ये हनुमान हैं।पाँच वर्ष की अल्प आयु में हनुमान विद्या अध्ययन के लिये अपने गुरु सूर्यदेव के पास पहुँच गए। सूर्यदेव ने मन में बालकों का खेल समझ कर बहाना किया। उन्होंने हनुमान से कहा, 'मेरा तेज बहुत प्रचंड एवं असहनीय है, इसे मैं हर लूँगा और आप मेरे तेज से प्रकाशमान रहेंगे।हनुमान ने चौदह विद्याएँ चौदह दिन में सीख ली। इससे सूर्यदेव का तेज कम हो गया। गुरुशिष्य से प्रश्न पृछते थे लेकिन शिष्य द्वारा दिये गये उत्तर को समझ नहीं पाते थे। सूर्यदेव सोचनेलगे, इस चंचल वानर को विद्या प्रदान करने का वचन मैंने क्यों दिया होगा? अन्ततः सूर्यदेव ने श्रीहरि से विनती

की, मेरे गुरु-पद की लाज अब आपके हाथ में है। श्रीहरि ने हनुमान को समझाया कि गुरु को पूरा सम्मान दे, शास्त्रों की मर्यादा रखो। तुम्हारी विद्या को इस संसार मेंसुपुत करनेवाला न कोई है और न कोई होगा।अभीपर शिक्षा को जारी रखो। पुनः अपने गुरु के पास जाओ, उनकी मर्यादा का सम्मान करो। इस तरह श्रीहरि ने गुरु और शिष्य के बीच समन्वय स्थापित कर दिया। हनुमान ने अठ्ठारह मास तक अपने गुरु से शिक्षा ग्रहण की। इस अवधि मेंअपने गुरु को पूर्ण सम्मान दिया। गुरु की मर्यादा और सम्मान का पूर्ण खयाल रखा। हनुमान ने जिस आश्चर्यपूर्णतरीके से विद्याध्ययन किया वह वास्तव में तीनों लोकों को चकित कर देने वाला है।शिक्षा प्रदान के इस अचरज भर खेल को देखकर इन्द्रादि लोकपाल, विष्णु, रुद्र और ब्रह्मा की आँखें चौंधिया गईं।शिक्षा पूर्ण होते ही हनुमान ने विम्रम होकर अपने गुरु से गुरु-दक्षिणा माँगने के लिये निवेदन किया तो सूर्यदेव ने कहा,'मेरा पुत्र सुग्रीव वानररूप में तुम्हें मिलेगा। जब तक उसे प्रभु श्रीराम नहीं मिलें तब तक तुम उसकी रक्षा करना।' अपने गुरु की आज्ञा को हनुमान ने पूर्ण सम्मान प्रदान करते हुए आगे चल कर वानरराज सुग्रीव को भी पूर्ण सम्मान प्रदान किया, उनकी रक्षा की और उन्हें ब्रह्म से मिलाकर हमेशा के लिए भयमुक्त भी किया।हनुमान बचपन में बहुत चंचल थे और ऋषि-मुनियों के आश्रम में जाकर उन्हें बहुत परेशानकरते थे। उनकी इस चंचलता से माता-पिता भी बहुत परेशान होते। दण्ड के रूप में औस्रा और भृगुवर्षियों ने हनुमान को अपनी शक्तियाँ दीर्घकाल तक भूलने का शाप दे दिया। साथ ही यह भी अवगत करा दिया कि यदि कोई तुम्हें तुम्हारी शक्तियों का स्मरण करायेगा तो शक्तियाँ पुनः प्राप्त हो जायेंगी। भृगु ऋषियों द्वारा दिये गये इस शाप की जानकारी केवल जामवंतजी को ही थी। इस शाप के बाद हनुमान का व्यवहार बहुत ही सौम्य और शिष्ट हो गया।सुग्रीव के सचिव पद से ही प्रारम्भ होती है हनुमान चरित्र की यात्रा। यहीं इन्होंने अपने स्वामी श्रीराम को पहचाना और उनके दास बन गये। जामवंत हनुमान से कहते हैं- 'हे बलवान! क्या चुप साथ रखी है, पवन पुत्रा हो, बल में पवन के समान हो, बुद्धि, विवेक और विज्ञान की खान हो।श्रीराम के कार्य के लिये तुम्हारा अवतार हुआ है। जगत मेंऐसा कौन सा कठिन काम है जो तुमसेन हो सके!'

कंफर्ट जोन से बाहर आकर एक्शन-कॉमेडी फिल्ममें करना चाहती हैं शालिनी पांडे

अभिनेत्री शालिनी पांडे ने अपने करियर में अलग-अलग जॉनर की फिल्मों और सीरीज में काम किया है। अब अभिनेत्री की इच्छा एक्शन फिल्म में काम करने की है। 'धुरंधर' को अपनी मौजूदा पसंदीदा फिल्म बताते हुए शालिनी ने इन दो कलाकारों को अपना फेवरेट बताया और काम करने की इच्छा जताई। एक्ट्रेस ने अपनी महत्वाकांक्षाओं को लेकर भी बात की। बातचीत में शालिनी पांडे ने कहा कि मैं इतनी महत्वाकांक्षी हूँ कि मुझे लगता है कि मैं बहुत कुछ करना चाहती हूँ। मैंने जीवन भर खेल खेले हैं और मुझे खेल बहुत पसंद है, इसलिए मुझे लगता है कि मैं एक एक्शन फिल्म में काम करना चाहूँगी। मुझे एक्शन पसंद है। मुझे इसका रोमांच बहुत अच्छा लगता है। इसलिए एक्शन ही वह चीज है जो मैं करना चाहती हूँ। अभिनेत्री ने आगे कॉमेडी जॉनर को लेकर कहा कि कॉमेडी एक ऐसा क्षेत्र है, जिसे मैं पूरी तरह से एक्सप्लोर करना चाहती हूँ क्योंकि एक दर्शक के रूप में मुझे ये चीजें पसंद आती हैं। मुझे लगता है कि एक्शन और कॉमेडी दोनों ही तरह के रोल मुझे पसंद हैं। मैं ऐसे लोगों के साथ काम करना चाहती हूँ जो एक एक्टर के रूप में

मुझे प्रेरित करें, जो मुझे मेरे कंफर्ट जोन से बाहर निकलने के लिए प्रेरित करें। ऐसा नहीं है कि मैं जहां भी हूँ वहां बहुत सहज होने की कोशिश नहीं करती, लेकिन एक एक्टर के रूप में मैं खुद को आगे बढ़ाना चाहती हूँ। मैं ऐसी जगह नहीं रहना चाहती, जहां मेरा विकास बिल्कुल न हो रहा हो।

ऋतिक और रणवीर को बताया अपना फेवरेट एक्टर

किस तरह के कलाकार के साथ काम करने के सवाल पर शालिनी ने कहा कि मुझे उम्मीद है कि मुझे किसी ऐसे व्यक्ति के साथ काम करने का मौका मिले जो मेरा पूरक हो और मैं उस व्यक्ति का पूरक बन सकूँ। वहीं एक्टर को लेकर उन्होंने कहा कि मुझे सबसे पहले रणवीर सिंह एक अभिनेता के रूप में बहुत पसंद हैं। मैंने 'धुरंधर' देखी है, जो मेरी हाल की पसंदीदा फिल्मों में से एक है, इसलिए मुझे लगता है कि वह हर तरह की भूमिका में अच्छे हो सकते हैं। इसके अलावा ऋतिक रोशन भी इस लिस्ट में हैं, क्योंकि मैंने उन्हें बचपन से ये सब करते देखा है। मुझे लगता है कि सबसे पहले इन्हीं दो लोगों का नाम आता है।

आखिरी बार इस सीरीज में नजर आई थीं शालिनी

वर्कफ्रंट की बात करें तो तेलुगु फिल्म 'अर्जुन रेड्डी' से अपने करियर की शुरुआत करने वाली शालिनी ने बॉलीवुड में डेब्यू रणवीर सिंह के ही साथ किया। 2022 में रणवीर के साथ फिल्म 'जयेशभाई जोरदार' से उन्होंने हिंदी फिल्मों में कदम रखा है। वो आखिरी बार इसी साल आई फिल्म 'राहु केतु' और सीरीज 'बैंगलाल' में नजर आई हैं।

मोहनलाल के साथ अपनी 100वीं फिल्म करेंगे प्रियदर्शन

प्रियदर्शन ने बतौर निर्देशक 'पूवकोर मूवकुथी' से डेब्यू किया था। अब प्रियदर्शन अपनी 100वीं फिल्म लेकर आ रहे हैं। अपनी 100वीं फिल्म में प्रियदर्शन उसी अभिनेता के साथ काम करेंगे, जिनके साथ उन्होंने अपनी डेब्यू फिल्म की थी।



प्रियदर्शन और मोहनलाल की जोड़ी बहुत खास है, क्योंकि मोहनलाल ने प्रियदर्शन की पहली फिल्म 'पूवकोर मूवकुथी' में भी मुख्य भूमिका निभाई थी। अब उनकी 100वीं फिल्म में भी मोहनलाल हीरो होंगे।

किस पर आधारित होगी फिल्म

प्रियदर्शन की 100वीं फिल्म का नाम अभी नहीं तय हुआ है। यह कॉमेडी नहीं, बल्कि एक म्यूजिकल फिल्म हो सकती है। फिल्म की शूटिंग जल्द शुरू होने की उम्मीद है। हो सकता है कि इस फिल्म की शूटिंग 2026 में ही शुरू हो जाए। इस फिल्म को एंटनी पेरुबावूर की कंपनी बनाएगी। बिनु जॉर्ज अलेक्जेंडर इसके सह-निर्माता हैं।

मोहनलाल का पोस्ट

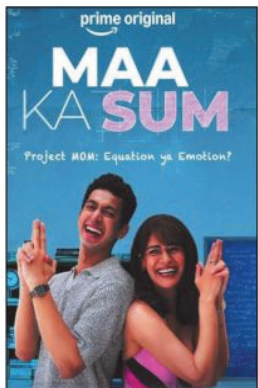
मोहनलाल ने इंस्टाग्राम पर इस फिल्म को लेकर एक भावुक पोस्ट शेयर किया है। उन्होंने लिखा कि यह पल सिर्फ एक व्यक्ति का नहीं, बल्कि सभी लोगों का है जो इस सफर के गवाह बने। उन्होंने प्रियदर्शन को बधाई दी और कहा कि 100 फिल्में सिर्फ संख्या नहीं, बल्कि जुनून, लगन और सिनेमा के जादू की पूरी जिदगी हैं। वह इस ऐतिहासिक फिल्म का हिस्सा बनकर बहुत खुश और सम्मानित महसूस कर रहे हैं।

प्रियदर्शन की डेब्यू फिल्म 'पूवकोर मूवकुथी'

साल 1984 में 'पूवकोर मूवकुथी' नाम की कॉमेडी फिल्म से प्रियदर्शन ने निर्देशक के तौर पर डेब्यू किया था। अपनी पहली ही फिल्म में उन्होंने मोहनलाल को हीरो चुना था। उस दिन से मलयालम फिल्म इंडस्ट्री में दोनों का साथ शुरू हुआ, जो अब उनकी 100वीं फिल्म तक जा पहुंचा है।

ओटीटी पर स्ट्रीम होगी मोना सिंह और मिहिर आहूजा की नई वेब सीरीज 'मां का सम'

मोना सिंह और मिहिर आहूजा वेब सीरीज 'मां का सम' में एक साथ नजर आने वाले हैं। मोना और मिहिर के अलावा इस सीरीज में अगिरा धर और रणवीर बराड़ भी अहम किरदार में नजर आएंगे। जानें किस ओटीटी प्लेटफॉर्म पर स्ट्रीम होगी सीरीज? 'मां का सम' एक नई वेब सीरीज है। जिसका निर्देशन निकोलस खारकोंगोर ने किया है। इस सीरीज में मोना सिंह के साथ मुख्य भूमिका में मिहिर आहूजा नजर आएंगे। यह सीरीज 3 अप्रैल 2026 को प्राइम वीडियो रिलीज हो रही है। इस सीरीज की कहानी अगस्त्य नाम के एक होनहार टीनएज लड़के की है, जिसे मिहिर आहूजा ने निभाया है। अगस्त्य बहुत अच्छा मैसस का स्टूडेंट है। वह पूरी दुनिया को नंबरस, ग्राफ और लॉजिक के नजरिए से देखता है। उसकी सिंगल मां विनीता का रोल मोना सिंह ने निभाया है।



अदिवी ने की को-स्टार मृणाल ठाकुर की तारीफ

अदिवी शेष की फिल्म 'डकेत' इन दिनों चर्चा में है। हालांकि, फिल्म जितनी अपनी कहानी को लेकर सुर्खियों में है, उससे ज्यादा इसकी कास्टिंग में आए बदलाव को लेकर भी चर्चा बनी हुई है। शुरुआत में इस फिल्म का हिस्सा रही श्रुति हासन बीच में ही बाहर हो गई, जिसके बाद मृणाल ठाकुर की एंट्री हुई। मृणाल ठाकुर की एंट्री पर अदिवी शेष बताते हैं, 'श्रुति के जाने के बाद हमने मृणाल को फिल्म सुनाई। सुबह 10 बजे हमने उन्हें पिच किया और दोपहर 1 बजे तक उन्होंने हॉं कह दी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था। आमतौर पर जवाब आने में हफ्ते या महीने लग जाते हैं, लेकिन उन्होंने तुरंत दिल से कहा कि उन्हें फिल्म बहुत पसंद आई।' वह कहते हैं, 'मृणाल बहुत खूबसूरत, टैलेंटेड और बेहद डाउन टू अर्थ हैं।

उनसे बात करना बहुत आसान है, वो बहुत स्वीट हैं। मैं कहूँगा कि फिल्म में वो इसकी सोल हैं, जबकि मैं गुस्सा और प्यारी वाला हिस्सा हूँ।

सेट पर चोटिल हो गए थे अदिवी-मृणाल

एक किस्सा शेयर करते हुए वह बताते हैं, 'एक एक्शन सीन के दौरान हम दोनों को चोट लग गई थी। सीन में मुझे उन्हें उठाकर चलना था, लेकिन मैं पथर पर ट्रिप कर गया और हम दोनों गिर गए। उन्हें बैक स्पेन हो गया और मुझे भी चोट आई। आज भी वो मजाक में कहती हैं, 'देखो आपने क्या किया...' और अपना निशान दिखाती हैं। अब वो मजाक लगता है, लेकिन उस वक्त हम काफी डर गए थे। शूटिंग कुछ समय के लिए रुक गई थी और रिलीज प्लान भी आगे बढ़ाना पड़ा था।'



वामिका गब्बी बनीं मेकर्स की पहली पसंद

अक्षय कुमार के साथ 'भूत-बंगला' से सिनेमाघरों में दस्तक देने वाली वामिका गब्बी के लिए साल 2026 बेहतरीन होने वाला है क्योंकि अभिनेत्री सिर्फ हिंदी सिनेमा में ही नहीं, बल्कि मलयालम और तमिल सिनेमा में भी धूम मचाने के लिए तैयार हैं। अभिनेत्री की एक नही, बल्कि 7 फिल्में बॉक्स ऑफिस पर इस साल दस्तक दे सकती हैं, जो कॉमेडी से लेकर एक्शन के जॉनर में होने वाली हैं। इन सभी फिल्मों में अभिनेत्रियों का अलग-अलग अवतार फैंस को देखने को मिलने वाला है। वामिका 'भूत-बंगला' के साथ 10 अप्रैल को सिनेमाघरों में दस्तक देगी। फिल्म हॉरर और कॉमेडी का मिक्स कॉन्टेंट होने वाली है। फिल्म को प्रियदर्शन डायरेक्ट कर रहे हैं, और ऐसे में यह कहना गलत नहीं होगा कि दर्शक डरने के साथ पेट पकड़कर हंसने भी वाले हैं। वामिका 4 साल बाद मलयालम सिनेमा में वापसी के लिए तैयार हैं। वह 'टिकी टाका' फिल्म में अभिनेत्री आसिफ अली के साथ लीड रोल में दिखने वाली हैं। फिल्म पहली 2025 में दिसंबर के महीने में रिलीज होने वाली थी, लेकिन अब फिल्म मई के महीने में रिलीज हो सकती है। फिल्म का निर्देशन रोहित वीरस कर रहे हैं, जो पहले से ही अपनी एक्शन से भरपूर फिल्मों के लिए जाने जाते हैं। सिर्फ मलयालम में ही नहीं, वामिका तमिल सिनेमा में फेंटसी फिल्म 'जिनी' में

महत्वपूर्ण भूमिका में नजर आने वाली हैं। फिल्म का निर्देशन अर्जुनन जूनियर कर रहे हैं और फिल्म में वामिका के अलावा, जयम रवि और कल्याणी प्रियदर्शन भी लीड रोल में हैं। अभी तक फिल्म का पोस्टर सामने आया है जिसमें सभी लोग काल्पनिक किरदारों में दिख रहे हैं। फिल्म इसी साल, 2026, में रिलीज होगी। इसके अलावा वामिका 'दिल का दरवाजा खोल ना डार्लिंग' और 'पति पत्नी और वो दो' में दिखने वाली हैं। 'दिल का दरवाजा खोल ना डार्लिंग' रोमांटिक और कॉमेडी का मिक्स कॉन्टेंट है, जबकि 'पति पत्नी और वो दो' में जबरदस्त कॉमेडी और रिश्तों की नोक-झोंक दिखने वाली है। दोनों ही फिल्में इसी साल पड़े पर रिलीज होने वाली हैं। 'दिल का दरवाजा खोल ना डार्लिंग' की शूटिंग भी लगभग पूरी हो चुकी है। वामिका 'किक्ली' के जरिए पंजाबी सिनेमा में भी एक्शन करती नजर आने वाली हैं। 'किक्ली' आगामी एक्शन-थ्रिलर फिल्म में मंदी तखर और जोबनप्रीत लीड रोल में हैं। फिल्म की रिलीज डेट का ऐलान नहीं हुआ है, लेकिन माना जाता है कि फिल्म इस साल के आखिर तक रिलीज हो जाएगी। वहीं, अभिनेत्री एक्शन और थ्रिलर से भरी फिल्म 'जी-2' में भी दिखने वाली है। कहा जाता रहा है कि फिल्म मई के आखिर में रिलीज हो सकती है।

करण कुंद्रा और तेजस्वी की गुपचुप शादी पर ट्वीट्स वायरल

करण कुंद्रा और तेजस्वी प्रकाश की गुपचुप शादी की खबरें आ रही हैं। सोशल मीडिया पर कई ट्वीट्स वायरल हैं, जिनमें यूजर्स कपल को बधाई दे रहे हैं। हालांकि, फैंस कन्फ्यूज हैं। अभी करण और तेजस्वी ने भी रिपवट नहीं किया है। वहीं, भारती ने हाल ही बताया था कि उन्हें करण पर क्रश था। करण कुंद्रा और तेजस्वी प्रकाश टीवी के पॉपुलर कपल हैं और चार साल से एक-दूसरे को डेट कर रहे हैं। फैंस काफी समय से उनकी शादी का इंतजार कर रहे थे, और दावा किया जा रहा है कि उन्होंने गुपचुप शादी कर ली है। सोशल मीडिया और झू पर कई पोस्ट वायरल हैं, जिनमें दावा किया गया है कि करण और तेजस्वी ने गुपचुप शादी कर ली है। यूजर्स भी कपल को बधाई दे रहे हैं। हालांकि, कुछ फैंस ऐसे भी हैं जो ऐसे ट्वीट्स देख कन्फ्यूज हो गए हैं। वो पूछ रहे हैं कि आखिर सब करण और तेजस्वी को शादी की बधाई क्यों दे रहे हैं? क्या

उन्होंने वाकई गुपचुप शादी कर ली है?

वहीं, प्रिंस नरुला ने भी एक बार एक इंटरव्यू में करण और तेजस्वी की शादी कन्फर्म की थी।

करण कुंद्रा 'बिग बॉस 15' में नजर आए थे, और उसी शो के दौरान उनकी तेजस्वी प्रकाश के साथ लव स्टोरी शुरू हुई। करण कुंद्रा और तेजस्वी चार साल से डेट कर रहे हैं, और फैंस उनकी शादी का बेसब्री से इंतजार कर रहे थे। अब गुपचुप शादी की खबरों से सोशल मीडिया पटा पड़ा है, पर कपल की तरफ से कोई बयान नहीं आया है। वैसे यूजर्स पर कल को बधाई दे रहे हैं। वायरल ट्वीट्स आप यहां देख सकते हैं:

करण और तेजस्वी के साथ

भारती सिंह का बॉन्ड भारती ने आगे बताया, 'मेरी बहन तो करण के लिए इतनी पागल थी कि बर्तन धोते हुए भी बीच में ही छोड़कर आ जाती

थी ताकि करण को टीवी पर देख सके।' और अब भारती और करण 'लाफ्टर शेपस' में गर्दी उड़ा रहे हैं। दोनों की केमिस्ट्री और मस्ती-मजाक दर्शक खूब पसंद करते हैं। भारती का करण और तेजस्वी के साथ काफी करीबी बॉन्ड भी है।

करण कुंद्रा का करियर

करण कुंद्रा की बात करें, तो उन्होंने साल 2009 में टीवी शो 'कितनी मोहब्बत है' से एक्टिंग डेब्यू किया था, और छा गए थे। वह देखते ही देखते घर-घर मशहूर हो गए थे। इसके बाद उन्होंने 'कितनी मोहब्बत है 2', 'दिल ही तो है', 'ये कहां आ गए हम' और अब 'नागिन 7' में काम किया। वहीं, भारती ने साल 2008 में रियलिटी शो 'द ग्रेट इंडियन लाफ्टर चैलेंज' से शुरुआत की थी। इसमें वह बतौर कंटेस्टेंट शामिल हुई थीं। लल्लू के किरदार ने भारती सिंह को मशहूर कर दिया था।

प्रिंस नरुला ने कन्फर्म की थी करण-तेजस्वी की शादी

वहीं, प्रिंस नरुला ने एक बार नयनदीप रश्मि को दिए इंटरव्यू में करण-तेजस्वी की शादी कन्फर्म की थी। जब पूछा गया कि उनके करीबी दोस्त करण कब शादी करेंगे, तो प्रिंस ने कहा था, 'वो एक शो के बाद करेंगी शादी, एक कमिटमेंट है उसके बाद।' तभी युविका चौधरी बोल पड़ी थीं- कहीं शो पर तो शादी नहीं कर रहे हैं? तो प्रिंस ने जवाब दिया था, 'पता नहीं, हो भी सकता है।'





मीनोपोज के बाद के मोटापे को यूं घटाएं

मीनोपोज (माहवारी) बंद होने के बाद बढ़ने वाला बैली फैट कई महिलाओं के लिए एक बड़ी समस्या है। ये कोई साधारण फैट नहीं है, जो डाइटिंग और योगा से कम हो जाए। इसलिए इसे जिंदी फैट भी कहा जाता है। शोधकर्ताओं ने इस वजह को ढूंढ निकाला है कि आखिर मीनोपोज के बाद मोटापा क्यों बढ़ता है? शोधकर्ताओं के मुताबिक, मीनोपोज के बाद एस्ट्रोजन लेवल कम होने से हिप्स और थाईज का फैट लोअर-एल्लोमन में चला जाता है लेकिन डाइट में बदलाव करके आप शरीर का एक्सट्रा फैट घटा सकते हैं।

आमतौर पर महिलाएं बैली फैट कम करने के चक्कर में हेल्दी फैट का सेवन करना भी छोड़ देती हैं जो कि गलत है। क्या आप जानते हैं कुछ फैट ऐसे भी होते हैं जिनका सेवन बैली फैट घटाने में मदद कर सकता है। जैसे एवोकेडो, ऑलिव्स, सैल्मन मछली और कोकोनट ऑयल। अध्ययन से पता चला है कि एक महीने के लिए हर सप्ताह तीन बार 28 ग्राम साल्मन मछली खाने से लगभग एक किलो से अधिक वजन घटाया जा सकता है। ऐप्पल साइडर विनेगर (सिरका) आपके मेटाबॉलिज्म को तेज करने में मदद करता है। सिरका में शामिल एसिडिक एसिड प्रोटीन वजन कम करने में मदद करता है। इसके साथ ही ग्रीन स्मूदी भी आपका बैली फैट घटाने में मददगार हो सकती है।

ये हैं डैंड्रफ को दूर करने के उपाय



अधिकतर महिलाएं डैंड्रफ की समस्या से परेशान रहती हैं। इससे स्कैल्प में सफेद रंग की पपड़ी जमने लगती है। डैंड्रफ के कारण सिर में खुजली भी होने लगती है। बहुत अधि?क खुजली करने से सिर में घाव बन जाते हैं। साथ ही बालों की जड़ें भी कमजोर हो जाती है। कुछ खास उपायों की सहायता से आप डैंड्रफ की इस समस्या से राहत पा सकती हैं।

डैंड्रफ की समस्या को दूर करने के लिए जरूरी है कि आप नियमित रूप से बालों में कंधी करें। इससे बालों की जड़ों से ज्यादा तेल निकलता है। इसके अलावा बालों में कंधी करने से बालों की ग्रोथ भी बढ़ती है।

डैंड्रफ में अच्छी क्वालिटी के शैंपू का ही इस्तेमाल करें। ऐसे हेयर प्रोडक्ट का इस्तेमाल करें जिसमें जिक पाइरिथियन मौजूद होता है। ये डैंड्रफ को दूर करने में कारगर साबित होता है।

एलोवेरा के रस से बालों की मसाज करें और एक घंटे बाद ठंडे पानी से धो लें। ऐसा करने से डैंड्रफ की समस्या दूर हो जाएगी। नारियल के तेल में कपूर मिलाकर रख लें। नहाने से आधे घंटे पहले इससे बालों की मसाज करें। नियमित रूप से ऐसा करने से डैंड्रफ की समस्या दूर हो जाएगी। अपने बालों को रोजाना अच्छी क्वालिटी के एंटी-डैंड्रफ शैंपू से धोएं। इससे डैंड्रफ की समस्या काफी हद तक खत्म हो जाती है। एक गर्म?लास पानी में चार बड़े चम्मच बेसन मिलाकर पेस्ट बना लें और इसे बालों में लगाकर एक घंटे के लिए छोड़ दें और फिर बाल धो लें।

मेहंदी तभी खूबसूरत लगती है, जब उसका रंग गहरा हो

शादियों का सीजन चल रहा है, ऐसे में मेहंदी के बिना श्रृंगार पूरा नहीं होता। मेहंदी लगाना न केवल सोलह श्रृंगार में से एक है बल्किर इसे शुभ शगुन के तौर पर भी देखा जाता है। हमारे देश में कोई भी खास मौका हो, हाथों में मेहंदी रचाए बिना पूरा नहीं माना जाता। पर मेहंदी तभी खूबसूरत लगती है, जब उसका रंग गहरा हो और यह सही से रचे। मेहंदी का एक खास गहरा लाल रंग होता है जो हाथों पर बेहद खूबसूरत लगता है।

कई बार ऐसा होता है कि मेहंदी लगी तो बहुत अच्छी होती है लेकिन सही से न रचने के कारण खूबसूरत डिजाइन भी खिलकर नहीं आ पाता। ऐसे में आप इन उपायों को अपनाकर गहरी और खूबसूरत मेहंदी रचा सकती हैं। पहले यह तय कर लें कि आपकी मेहंदी का घोल अच्छे से तैयार किया गया हो।

इन उपायों को अपनाने से गहरी रंगेगी मेहंदी मेहंदी लगाने के बाद धैर्य रखना बहुत जरूरी है। कम से कम पांच से छह घंटे के लिए मेहंदी को हाथों पर रचे रहने दें। इससे मेहंदी का रंग गहरा चढ़ता है।

नींबू और चीनी के घोल के इस्तेमाल से भी मेहंदी का रंग गहरा चढ़ता है। दरअसल, इस घोल को लगाने से मेहंदी ज्यादा देर के लिए हाथों में चिपकी रहती है और इससे उसका रंग गहरा हो जाता है।

मेहंदी छुड़ाने के लिए पानी का इस्तेमाल न करें। हो सके तो 10 से 12 घंटों तक हाथों पर पानी के इस्तेमाल से बचें। साबुन के इस्तेमाल से दूर ही रहें तो बेहतर होगा। मेहंदी छुड़ाने के बाद सरसों के तेल को हाथों पर मल लें। इन उपायों को अपनाने से मेहंदी का रंग गहरा चढ़ता है।



मोतियाबिंद की समस्या पहले सिर्फ बुजुर्गों में ही पायी जाती थी लेकिन आजकल ये युवाओं और बच्चों को भी अपना शिकार बना रही है। अगर आप किसी बीमारी से ग्रस्त हैं तो उसका असर भी आपके आंखों की रोशनी पर होता है जिससे मोतियाबिंद की समस्या होती है।

हमारी आंख की पुतली के पीछे एक लेंस होता है। पुतली पर पड़ने वाली लाइट को यह लेंस फोकस करता है और रेटिना पर ऑब्जेक्ट की साफ इमेज बनाता है। रेटिना से यह इमेज नर्व्स तक और वहां से दिमाग तक पहुंचती है। आंख की पुतली के पीछे मौजूद यह लेंस पूरी तरह से साफ होता है, ताकि इससे लाइट आसानी से पास हो सके।

कभी-कभी इस लेंस पर कुछ धुंधलापन आ जाता है, जिसकी वजह से इससे गुजरने वाला प्रकाश का रास्ता बंद हो जाता है। इसका नतीजा यह होता है कि पूरी लाइट पास होने पर जो ऑब्जेक्ट इंसान को बिल्कुल साफ दिखाई देता है, अब कम लाइट पास होने की वजह से वही ऑब्जेक्ट धुंधला नजर आने लगता है। लेंस पर होनेवाले इसी धुंधलेपन की स्थिति को मोतियाबिंद कहा जाता है। यह क्लाउडिंग धीरे-धीरे बढ़ती जाती है और मरीज की नजर पहले से ज्यादा धुंधली होती जाती है। मोतियाबिंद के कारण हो सकती हैं ये बीमारियां।

मधुमेह

मधुमेह शरीर के दूसरे अंगों जैसे गुर्दे और हृदय की ही अनेक बीमारियों का कारण ही नहीं है बल्कि आंखों पर भी कई प्रकार से इसका दुष्प्रभाव



इस कारण होता है मोतियाबिंद

पड़ता है। मधुमेह के लगभग 80 प्रतिशत रोगियों को जीवन में आंखों की किसी न किसी समस्या का सामना अवश्य करना पड़ता है। आंखों की इन समस्याओं में प्रमुख हैं- डायबेटिक रेटिनोपैथी, मोतियाबिंद तथा काला मोतिया। मधुमेह के कारण होने वाली इन बीमारियों से बचने के लिए जरूरी है कि मधुमेह के रोगी समय-समय

अपनी आंखों की जांच कराते रहें और कोई भी दिक्कत सामने आते ही उसका इलाज करवाना शुरू कर दें। कुछ मरीजों में लेंस में धुंधलापन आ जाता है, उसकी पारदर्शिता खत्म हो जाती है इसे डायबिटिक कैटरैक्ट कहते हैं।

यूवाइटिस

यूवाइटिस एक प्रकार की सूजन है जो यूवेइआ में होते हैं। इसके कई

कारण हो सकते हैं जिनमें ट्रामा या संक्रमण भी एक हैं। इस बीमारी के कोई भी ज्ञात कारण नहीं है। मोतियाबिंद की समस्या उन लोगों में ज्यादा होती है जो जो यूवाइटिस से ग्रस्त होते हैं। यूवाइटिस अमेरिका, यूरोप और अन्य विकसित देशों में तेजी से फैल रही है। भारत में भी इस बीमारी के मरीजों की संख्या धीरे-धीरे बढ़ रही है। दुनिया में यूवाइटिस

को कैंसर से भी खतरनाक माना जा रहा है।

मायोपिया में मोतियाबिंद का खतरा ज्यादा

जो लोग उच्च निकट दृष्टि दोष (मायोपिया) से प्रभावित होते हैं उनमें मोतियाबिंद का खतरा कहीं अधिक होता है। डॉक्टर के मुताबिक बचपन में देखन की क्षमता का विकास होता और किशोरावस्था में आंख की लंबाई बढ़ती है लेकिन निकट दृष्टि दोष होने की वजह से यह कुछ ज्यादा ही बढ़ जाती है। ऐसी स्थिति में आंख में जानेवाला प्रकाश रेटिना पर केंद्रित नहीं होता। इसी वजह से तस्वीर धुंधली दिखाई देती है लेकिन इस दोष को कॉटैक्ट लेंस या सर्जरी से ठीक कराया जा सकता है।

इस प्रकार लंबे समय तक चलेंगे ब्यूटी प्रोडक्ट

खूबसूरती निखारने आप घरेलू नुस्खे भी आजमा सकती हैं। हमेशा महंगे उत्पाद खरीदने की जरूरत नहीं है। मस्कारा व आईलाइनर सुख जाए या फिर खत्म होने की स्थिति में हो तो उसे हल्के गर्म पानी में रखें या कॉन्टैक्ट लेंस सॉल्यूशन की कुछ बूंदें डालकर उनको आप एक बार फिर इस्तेमाल कर सकती हैं। मेकअप हटाने के लिए रिमूवर व क्लीजिंग मिल्क की जगह नारियल तेल, बेबी ऑयल या फिर दूध का उपयोग किया जा सकता है। फाउंडेशन वाला स्पंज अगर खराब हो गया है तो ब्रश से भी फाउंडेशन लगा सकती हैं। ब्रश से उसे फैलाएं, फिर टिशयू पेपर को हल्का गीला करके उसको एक सार करें।

डार्क शैड के फाउंडेशन को अपनी स्किन टोन से मिलाने के लिए फाउंडेशन और मॉइश्चराइजर के साथ इसे मिलाएं।

लिप बाम बनाने के लिए बची हुए लिपस्टिक किसी स्टिक से निकाल लें फिर उसे माइक्रोवेव में मेल्ट कर लें। फिर उसे एक बाउल में निकाल लें। फिर इसे लिप बाम की तरह इस्तेमाल करें। स्क्रब खत्म हो जाए तो नया स्क्रब खरीदने की जगह ब्राउन शुगर और शहद को आपस में मिला कर स्क्रब बनाएं।



गालों की ललिमा को बनाए रखने के लिए ब्लशऑन की जगह पिंग लिपस्टिक का भी इस्तेमाल कर सकती हैं। अगर बॉक्स में ड्राई आईशैडो टूट गया है तो इसे जोड़ने के लिए उसमें एल्कोहल की कुछ बूंदें डालकर मिलाएं और उसी डिब्बी में जमा कर रखें। टूटे कॉम्पैक्ट को एक डिब्बी में एक साथ रख लें। फिर उसे इस्तेमाल करें। टूटी हुई लिपस्टिक को जोड़ने के लिए उसे थोड़ा गर्म करे या फिर हैयर ड्रायर चला कर टूटे हिस्सों को जोड़ दें।



सेहतमंद रहने के लिए सुधारें कुछ आदतें

दिन में सपने देखना

दिन में सपना देखने को अक्सर लोग बुरा मानत हैं। जबकि एक शोध में ये बुरी नहीं बल्कि एक अच्छी आदत मानी गई है। एक्सपर्ट्स का दावा है कि दिन में सपने देखने वाले लोगों की याददाश्त तेज होती है। वो ना सिर्फ फुर्तीले होते हैं बल्कि काफी बुद्धिमान भी होते हैं। दिन में सपने देखने वाले लोगों की याददाश्त बेहतर होती है, एकाग्रता अधिक रहती है और मल्टीटार्किंग में आसानी होती है।

कुछ ऐसी आदतें भी होती हैं जिन्हें आमतौर पर अच्छ नहीं माना जाता पर इनके साथ भी आप स्वस्थ जीवन जी सकते हैं। एक अध्ययन में यह बात सामने आई है। जैसे कि कॉफी की कम मात्रा सेहत के लिए अच्छी हो सकती है, लेकिन अधिक कॉफी पीना सेहत के लिए अच्छे नहीं माना जाता। दिनभर में तकरीबन तीन कॉफी पीने से पित्त की पथरी का खतरा कम होता है। किडनी

चॉकलेट के फायदे

अधिकतर लोग चॉकलेट को जंक फूड मानते हैं इसीलिए रोजाना चाकलेट

खाने से बचते हैं पर ऐसा नहीं है, चॉकलेट खाना बुरा नहीं है। रिसर्च के मुताबिक, चॉकलेट सिर्फ आपको मीठा खाने की संतुष्टि ही नहीं देता बल्कि ये दिल की जाते हैं, जो आपके मूड को ठीक करने में मदद करते हैं।

नींद की कमी से बढ़ जाता है कई बिमारियों का खतरा

रात में गहरी नींद सोने से सुबह हम तरोताजा महसूस करने के साथ ही स्वस्थ भी रहते हैं। वहीं नींद की कमी से कई बिमारियों को खतरा बढ़ जाता है। यह देखा गया है कि कई बार नींद नहीं आती या अगर आप रात के समय कम सोते हैं और सोने के बाद बार-बार आपकी नींद खुल जाती है, तो सावधान हो जाएं क्योंकि एक अध्ययन की रिपोर्ट में यह दावा किया गया है कि यह आपके दिल की क्षमता को पूरी तरह नष्ट कर सकती है।

ना केवल मानसिक, बल्कि यह शारीरिक सेहत के लिए भी ठीक नहीं है। अध्ययनकर्ताओं का दावा है कि इससे

डिमेंशिया बीमारी का खतरा बढ़ जाता है। एक किताब में कुछ ऐसा ही दावा किया गया है। किताब को लिखने वाले न्यूरोलॉजिस्ट का कहना है कि सोने के दौरान हमारा मस्तिष्क बहुत से काम करता है, जैसे कि यादों को संचित करने और उन्हें संभालने जैसे काम करता है। डिमेंशिया एक ऐसी बीमारी है, जिसमें आप चीजों को भूलने लगते हैं, आप का मूड बदलने लगता है, काम में आपका मन नहीं लगता और साथ ही आप चिड़चिड़े भी हो जाते हैं। कम नींद आपके दिमाग पर बरा

गॉसिपिंग से भी है लाभ

गॉसिप करना सेहत के लिए बहुत अच्छा होता है। गॉसिपिंग के दौरान बॉडी से फील गुड हार्मोन रिलीज होता है जो कि तनाव और एंजाइटी से मुक्त करने में मदद करता है। इसके अलावा, ऑफिस में गॉसिपिंग सेपटी वॉल्व की तरह होती है, जिससे आप अपने दिल की बात बाहर निकाल सकते हैं।

रात में सोने से लगभग 3 घंटे पहले तक कुछ ना खाएं क्योंकि देर रात खाते ही लेट जाने से खाना डाइजेस्ट नहीं हो पाता, जिस कारण सोने के बाद बार-बार आपकी आंख खुलती रहती है और आप सुकून की नींद नहीं ले पाते। सोते समय लाइट्स बंद रखें रोशनी का हमारे नींद पर बहुत असर पड़ता है। इसलिए सोने से पहले सभी लाइट्स को जरूर बंद करें, क्योंकि अंधेरे में नींद अच्छी आती है। जिन लोगों को रात के समय ठीक से नींद नहीं आती वो लोग दोपहर में कभी ना सोएं।



होगी, साथ ही क्षेत्र में अपराध और असामाजिक गतिविधियों के बढ़ने का खतरा भी रहेगा। संगठन के सदस्यों ने भी इस विरोध में अपने-अपने भागीदारी निभाते हुए कहा कि गांव के विकास और सुरक्षित माहौल के लिए इस तरह की दुकानों का खुलना

आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी करने वालों पर कड़ी करवाई के निर्देश

पश्चिम एशिया की परिस्थितियों पर मुख्यमंत्री की उच्चस्तरीय समीक्षा,वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से कमिश्नर, आईजी और कलेक्टरों को दिए निर्देश

पेट्रोलियम, गैस और उर्वरक की पर्याप्त उपलब्धता-अफ़्घांसें से दूर रहने की अपील आमजनों की सुविधा के लिए बनाया गया है राज्य स्तरीय कंट्रोल रूम:1800-233-3663 पर काल कर ले सकते हैं सही जानकारी

दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)। मुख्यमंत्री विष्णु देव साय ने पश्चिम एशिया में उत्पन्न परिस्थितियों के मलेनज़र आज राजधानी रायपुर स्थित मुख्यमंत्री निवास कार्यालय में वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग के माध्यम से प्रदेश के सभी संभागायुक्तों, पुलिस महानिरीक्षकों, कलेक्टरों एवं पुलिस अधीक्षकों के साथ एक उच्चस्तरीय समीक्षा बैठक की। बैठक में पेट्रोलियम उत्पादों, एलपीजी गैस, उर्वरकों और अन्य आवश्यक वस्तुओं की उपलब्धता एवं आपूर्ति व्यवस्था की व्यापक समीक्षा करते हुए अधिकारियों को आवश्यक दिशा-निर्देश दिए गए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि हमारे प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की दूरदृष्टि और संवेदनशील नेतृत्व के कारण कोविड जैसी चुनौतीपूर्ण स्थिति में भी देश एकजुट रहा और सफलतापूर्वक उसका सामना किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि वर्तमान में कोविड जैसी स्थिति नहीं है, लेकिन सतर्क रहना आवश्यक है। प्रदेश में पेट्रोलियम पदार्थों, गैस सिलेंडरों और उर्वरकों की कोई कमी नहीं है, अतः नागरिक किसी भी प्रकार की अफ़्वाहों पर ध्यान न दें।

मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा पश्चिम एशिया संकट पर सभी राज्यों के साथ विस्तृत चर्चा की गई है और यह आश्चस्त किया गया है कि आवश्यक वस्तुओं की आपूर्ति सुचारू रूप से जारी है। राज्य स्तर पर कंट्रोल रूम की स्थापना की गई है तथा उच्च स्तरीय समिति द्वारा स्थिति की सतत निगरानी की जा रही है। उन्होंने निर्देश दिए कि प्रत्येक जिले में भी कंट्रोल रूम स्थापित किया जाए तथा



प्रभारी सचिव और कलेक्टर नियमित समीक्षा करें। अफ़्वाहों और भ्रामक खबरों से बचने के लिए आमजन तक समय पर तथ्यात्मक जानकारी पहुंचाना सुनिश्चित किया जाए।

मुख्यमंत्री श्री साय ने स्पष्ट निर्देश दिए कि आवश्यक वस्तुओं की कालाबाजारी या जमाखोरी करने वालों पर कड़ी कार्रवाई की जाए। सभी पेट्रोल पंपों और गैस एजेंसियों के भंडारण एवं आपूर्ति की नियमित मॉनिटरिंग

सुनिश्चित की जाए। उन्होंने अधिकारियों से टीम भावना के साथ कार्य करते हुए हर परिस्थिति में आमजन तक सेवाओं की निर्बाध उपलब्धता सुनिश्चित करने के निर्देश दिए।

बैठक में एचपीसीएल, बीपीसीएल और आईओसीएल के अधिकारियों ने मुख्यमंत्री को अवगत कराया कि प्रदेश में गैस एवं पेट्रोलियम पदार्थों की कोई कमी नहीं है और आपूर्ति नियमित रूप से जारी है। गैस सिलेंडरों की ऑनलाइन

बुकिंग सामान्य रूप से संचालित है। उज्ज्वला गैस कनेक्शन के लिए 45 दिन तथा सामान्य गैस कनेक्शन के लिए 25 दिन की समय सीमा निर्धारित है और वर्तमान में उसी अंतराल के अनुसार बुकिंग की जा रही है। पेट्रोलियम पदार्थों के परिवहन में भी किसी प्रकार की बाधा नहीं है और पूरे प्रदेश में स्थिति सामान्य है।

मुख्य सचिव श्री विकास शील ने बताया कि वर्तमान परिस्थितियों की सतत निगरानी के लिए राज्य स्तर पर कंट्रोल रूम स्थापित किया गया है। उपभोक्ता घरेलू गैस आपूर्ति से संबंधित समस्याओं, शिकायतों अथवा कालाबाजारी की सूचना 1800-233-3663 पर दे सकते हैं। उन्होंने निर्देश दिए कि उक्त नंबर का व्यापक प्रचार-प्रसार किया जाए ताकि आमजन को सही जानकारी समय पर उपलब्ध हो सके और शिकायतों का त्वरित निराकरण सुनिश्चित किया जा सके।

बैठक में निर्देश दिए गए कि गैस,

पेट्रोल और डीजल की आपूर्ति से संबंधित समाचारों पर सतत निगरानी रखी जाए। भ्रामक खबरों से भय की स्थिति उत्पन्न हो सकती है, अतः ऐसी खबरों का तत्काल संज्ञान लेकर वास्तविक जानकारी जनता तक पहुंचाई जाए। सोशल मीडिया की भी विशेष निगरानी रखने और मीडिया प्रतिनिधियों के साथ नियमित संवाद बनाए रखने के निर्देश दिए गए।

उर्वरक उपलब्ध कराया जाए। साथ ही खाद वितरण प्रणाली को और अधिक पारदर्शी एवं प्रभावी बनाने के लिए सॉफ्टवेयर आधारित मॉनिटरिंग की जानकारी भी साझा की गई।

महत्वपूर्ण संस्थानों में गैस आपूर्ति सुनिश्चित करने के निर्देश

मुख्यमंत्री श्री साय ने अस्पतालों, छात्रावासों, शैक्षणिक संस्थानों, रेलवे, भारत सरकार की संस्थाओं, सैन्य एवं अर्धसैनिक बलों, समाज कल्याण विभाग द्वारा संचालित संस्थानों और एयरपोर्ट कैटीनों में गैस आपूर्ति निर्बाध बनाए रखने के निर्देश दिए।

बैठक में जानकारी दी गई कि प्रदेशभर में 335 स्थलों पर छापेमारी की गई, जिसमें कालाबाजारी की कोई पुष्टि नहीं हुई। हालांकि जमाखोरी की सूचना पर कार्रवाई करते हुए 3841 गैस सिलेंडरों को जब्त किया गया तथा 97 एफ़्माईआर दर्ज की गई हैं।

आम नागरिकों को सस्ती, स्वच्छ और आत्मनिर्भर बिजली की सौगात



नगर निगम की पहल से योजना के क्रियान्वयन में आ रही तेज़ी

पर्यावरण संरक्षण के साथ आर्थिक बचत की दिशा में बड़ा कदम

दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)। भारत सरकार के नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय द्वारा संचालित प्रधानमंत्री सूर्य घर: नगर बिजली योजना के प्रभावी क्रियान्वयन हेतु नगर पालिक निगम, दुर्ग द्वारा शहर क्षेत्र में विशेष पहल की जा रही है। इस महत्वाकांक्षी योजना के माध्यम से

शहर में सौर ऊर्जा को बढ़ावा देते हुए आम नागरिकों तक इसका व्यापक लाभ पहुंचाने के प्रयास तेज़ कर दिए गए हैं। नगर निगम प्रशासन का लक्ष्य है कि अधिक से अधिक नागरिक इस जनकल्याणकारी योजना से जुड़ें और अपने घरों में सोलर रूफटॉप स्थापित कर आत्मनिर्भर ऊर्जा की दिशा में कदम बढ़ाएं। इससे न केवल बिजली बिल में राहत मिलेगी, बल्कि शहर स्वच्छ ऊर्जा की ओर अग्रसर होगा।

योजना का उद्देश्य

प्रधानमंत्री सूर्य घर: मुफ्त बिजली योजना का मुख्य उद्देश्य आम नागरिकों को सौर ऊर्जा के

माध्यम से सस्ती, सुलभ एवं स्वच्छ बिजली उपलब्ध कराना है। साथ ही यह योजना पर्यावरण संरक्षण को प्रोत्साहित करते हुए कार्बन उत्सर्जन को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। यह योजना देश की ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनाने की दिशा में एक ऐतिहासिक पहल है, जो न केवल वर्तमान बल्कि आने वाली पीढ़ियों के लिए भी लाभकारी सिद्ध होगी। नगर निगम, दुर्ग द्वारा नागरिकों से अपील की गई है कि वे इस योजना का अधिकतम लाभ उठाएं और स्वच्छ एवं हरित भविष्य के निर्माण में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

हर वार्ड में दवाई छिड़काव एवं फॉगिंग से मच्छरों पर कड़ा नियंत्रण



दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)।

नियमित रूप से दवाई छिड़काव, दिन-रात जारी है अभियान

वार्डों की गलियों में सीकर स्प्रे मशीन से लगातार किया जा रहा दवाई छिड़काव

नगर पालिक निगम, दुर्ग द्वारा शहर के समस्त वार्डों में सफ़ाई अपनाओ - बीमारी भगाओ अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित किया जा रहा है। इस अभियान के अंतर्गत

नागरिकों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ बीमारियों की रोकथाम के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

निगम द्वारा प्रत्येक वार्ड के लिए विशेष रूट प्लान तैयार किया गया है, जिसके तहत दिन के समय सीकर (स्प्रे) मशीन के माध्यम से नियमित रूप से दवाई का छिड़काव किया जा रहा है।

यह कार्य व्यवस्थित रूप से सभी वार्डों में संचालित हो रहा है, जिससे मच्छरों एवं अन्य रोग फैलाने वाले जीवों पर प्रभावी नियंत्रण किया जा सके।

इसके साथ ही संध्या एवं रात्रिकालीन समय में फॉगिंग मशीन के माध्यम से लगातार फॉगिंग कार्य किया जा रहा है। निगम की टीम द्वारा शहर के विभिन्न क्षेत्रों में नियमित रूप से फॉगिंग कर मच्छरों के प्रकोप को कम करने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिससे डेंगू, मलेरिया एवं अन्य संक्रामक बीमारियों से नागरिकों की सुरक्षा सुनिश्चित हो सके।

इसके अतिरिक्त सफ़ाई कर्मियों द्वारा प्रतिदिन नालियों की सफ़ाई कर उनमें टेम्पफेस एवं बायो डार्ट का छिड़काव किया जा रहा है,

जिससे मच्छरों के लार्वा को नष्ट किया जा सके। यह अभियान निरंतर जारी है और इसका उद्देश्य शहर को स्वच्छ, सुरक्षित एवं रोगमुक्त बनाना है। नगर पालिक निगम, दुर्ग द्वारा नागरिकों से भी

अपील की गई है कि वे अपने आसपास स्वच्छता बनाए रखें, जलभराव न होने दें तथा इस अभियान में सक्रिय भागीदारी निभाते हुए शहर की स्वच्छ एवं स्वस्थ बनाने में सहयोग करें।

पॉन्ड क्लीनर मशीन से तालाबों की सफ़ाई में आई तेज़ी, पुलगांव गौठान तालाब बना उदाहरण

दुर्ग। नगर पालिक निगम दुर्ग द्वारा शहर के तालाबों की सफ़ाई के लिए आधुनिक तकनीक का उपयोग करते हुए पॉन्ड क्लीनर मशीन के माध्यम से विशेष अभियान चलाया जा रहा है। इसी क्रम में पुलगांव गौठान के समीप स्थित तालाब की सफ़ाई का कार्य तेज़ी के साथ किया जा रहा है जिससे क्षेत्र की स्वच्छता एवं सौंदर्य में उल्लेखनीय सुधार देखा जा रहा है। पॉन्ड क्लीनर मशीन को सहायता से तालाबों में जमा गंदगी, कचरा एवं जलकुंभी को प्रभावी रूप से हटाया जा रहा है, जिससे जल स्रोतों का संरक्षण भी सुनिश्चित हो रहा है।

निगम द्वारा इस तालाब की सफ़ाई पूर्ण होने के पश्चात शहर के अन्य तालाबों की सफ़ाई भी इसी मशीन के माध्यम से किए जाने की कार्ययोजना बनाई गई है। यह कार्य महापौर अलका बाघमार एवं सभापति श्याम शर्मा के मार्गदर्शन तथा आयुक्त सुमित अग्रवाल के निर्देशानुसार निरंतर किया जा रहा है। कर्मशाला अधीक्षक शोएब अहमद के नेतृत्व में टीम अमला के साथ कचरा एवं जलकुंभी को प्रभावी रूप से हटाया जा रहा है, बता दें कि निगम प्रशासन द्वारा तालाबों के संरक्षण एवं स्वच्छता को प्राथमिकता देते हुए इस अभियान को व्यापक स्तर पर संचालित किया जा रहा है। उल्लेखनीय है कि पॉन्ड क्लीनर मशीन के सफल उपयोग से निकाय के विभिन्न क्षेत्रों में पहले भी सफ़ाई कार्य संपन्न किए जा चुके हैं, जिसके सकारात्मक परिणाम सामने आए हैं।

संयंत्र के संचालन में लचीलापन, विश्वसनीयता एवं अनुरक्षण दक्षता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल

संयंत्र के सिंटर प्लांट-3 की मशीन-2 में नोडुलाइज़र बाय-पास च्यूट एवं फ्लैप गेट का सफल कमीशनिंग

भिलाई (ज्वाला एक्सप्रेस)। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के सिंटर प्लांट-3 की मशीन-2 में नोडुलाइज़र बाय-पास च्यूट एवं फ्लैप गेट का दिनांक 27 मार्च 2026 को सफलतापूर्वक कमीशनिंग एवं उद्घाटन किया गया। यह उपलब्धि संयंत्र के संचालन में लचीलापन, विश्वसनीयता एवं अनुरक्षण दक्षता को बढ़ाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

उद्घाटन समारोह का शुभारंभ मुख्य महाप्रबंधक प्रभारी (एम एंड यू) श्री बी. के. बेहरा द्वारा किया गया। इस अवसर पर मुख्य महाप्रबंधक (इलेक्ट्रिकल) श्री कृष्ण कुमार, मुख्य महाप्रबंधक (शाफ्ट्स) श्री एच. के. सचदेव, मुख्य महाप्रबंधक (मैकेनिकल) श्री पी. के. सिंह तथा मुख्य महाप्रबंधक (ओएचपी एवं एसपीड्यू) श्री सजीव वर्मा सहित संयंत्र के अन्य वरिष्ठ अधिकारीगण उपस्थित रहे। परियोजना का सफल क्रियान्वयन में सभी के मार्गदर्शन एवं सहयोग रहा।

यह उपलब्धि महाप्रबंधक (एमएम, एसपीड्यू) श्री आई. वी. रमण के नेतृत्व में एसपीड्यू की टीम का विशेष योगदान रहा, जिनमें महाप्रबंधक श्री ए. के.



बेडेकर एवं श्री आर. डी. शर्मा, उप महाप्रबंधक श्री एम. यू. राव, सहायक महाप्रबंधक श्री डी. के. गुप्ता एवं श्री विकास पिपराणी, वरिष्ठ प्रबंधक श्री ओम नमः शर्मा, श्री जितेश एच. सहानी, श्री विपिन मोर्य, श्री अरुणेश शर्मा तथा श्री राहुल सिंह शामिल रहें।

नोडुलाइज़र, सिंटर मशीन के संचालन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपकरण है, जिसके अनुरक्षण हेतु पूर्व में संपूर्ण मशीन को बंद करना पड़ता था। अब बाय-पास च्यूट एवं फ्लैप गेट की स्थापना के पश्चात नोडुलाइज़र का अनुरक्षण बिना सिंटर मशीन को पूर्णतः बंद किए किया जा सकेगा, जिससे उत्पादन की निरंतरता सुनिश्चित होगी। इस नवीन व्यवस्था के लागू होने से नोडुलाइज़र में किसी भी खराबी की स्थिति में संपूर्ण सिंटर मशीन के ठप होने का जोखिम

काफ़ी हद तक कम हो गया है तथा अब इसे केवल सीमित अवधि के अल्पकालिक शटडाउन तक नियंत्रित किया जा सकेगा। साथ ही, नोडुलाइज़र की कैपिटल रिपेयर अब स्वतंत्र रूप से संभव होगी, जिसके लिए पूरी सिंटर मशीन की कैपिटल रिपेयर की आवश्यकता नहीं होगी। इससे अनुरक्षण योजना, संसाधनों के बेहतर उपयोग एवं परिचालन दक्षता में उल्लेखनीय सुधार अपेक्षित है।

इस उपलब्धि में संयंत्र के विभिन्न विभागों का भी सहयोग प्राप्त हुआ, जिनमें महाप्रबंधक (ईडीडी) श्री मेजी मेजर सिंह, उप महाप्रबंधक (ईडीडी) श्री देवेंद्र सोनार, महाप्रबंधक (एफ एंड एसएस) श्री जितेंद्र मोटवानी तथा महाप्रबंधक (सीपीडी) श्री राजीव सोनटेके शामिल हैं।

एस.एम.एस.-2 विभाग में स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत व्यापक स्वच्छता अभियान आयोजित

भिलाई (ज्वाला एक्सप्रेस)। सेल-भिलाई इस्पात संयंत्र के स्टील मेल्टिंग शॉप-2 विभाग में 16 से 31 मार्च 2026 तक मनाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़ा के अंतर्गत 28 मार्च 2026 को एक व्यापक स्वच्छता अभियान एवं जन-जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम का उद्देश्य कार्यस्थल पर स्वच्छता एवं सुरक्षित कार्य वातावरण को बढ़ावा देना तथा कर्मचारियों में स्वच्छता के प्रति सतत जिम्मेदारी की भावना को प्रोत्साहित करना था। इस अवसर पर विभागीय परिसर में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने एवं सामूहिक सहभागिता को प्रोत्साहित करने

हेतु विभिन्न गतिविधियां संपन्न की गईं। कार्यक्रम में मुख्य महाप्रबंधक (एस.एम.एस.-2) श्री एस.के. घोषाल, महाप्रबंधक (एस.एम.एस.-2) श्री एस.के. देबसिकदर, महाप्रबंधक (एस.एम.एस.-2) श्री सोरभ जैन, महाप्रबंधक एवं विभागीय सुरक्षा अधिकारी (एस.एम.एस.-2) श्री बिनितोष बाला, महाप्रबंधक (एस.एम.एस.-2) श्री एस.पी. द्विवेदी, महाप्रबंधक श्री दिनेश अग्रवाल, महाप्रबंधक श्री एन.के. गंगवाल, महाप्रबंधक श्री बालम सिंह, महाप्रबंधक श्री आई.पी. मिश्रा, महाप्रबंधक श्री जी. रविकांत, महाप्रबंधक श्री एस.के. मलिक, उप महाप्रबंधक श्री वाय.के. साहु, उप महाप्रबंधक श्री नितिन अग्निहोत्री, सीजीएम सचिवालय से संबंधित अधिकारी, जूनियर इंजीनियर श्री संजीव सिंह सहित बड़ी संख्या में अधिकारी, कर्मचारी एवं ठेका श्रमिक उपस्थित रहे।

